।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/–
आजीवन : 1100/–
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
डाक पंजीकरण संख्या–
UP MRD Dn-64/2018-20
दयानन्दाब्द १९५
मानव सृष्टि सं.– १९६०८५३११९
सृष्टि सं.– १९७२९४९११९

वर्ष–17 अंक–19 पौष शु. 10 से माघ कृ. 11 सं. 2075 वि. 16–31 जनवरी 2019 अमरोहा, उ.प्र. पृष्ठ–16 प्रति–5/–

दीपचन्द आर्य नहीं रहे

किरतपुर (बिजनौर) उ.प्र.। उदारचेता, स्वनामधन्य व आर्यसमाज के प्रखर स्तंभ दीपचन्द आर्य का 19 दिसम्बर 2018 को देहावसान हो गया। श्री आर्य के निधन से सम्पूर्ण आर्य जगत में शोक की लहर दौड़ गयी।

स्वनामधन्य उदारमना, आर्यरत्न, प्रखर समाजसेवी आजीवन आर्यसमाज, गुरुकुल तथा वैदिक संस्थाओं के प्रति समर्पित रहे श्री आर्य का वैदिक धर्म, महर्षि दयानन्द के मिशन व आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए अतुलनीय योगदान रहा। वे आर्यसमाज के लिए सर्वस्व समर्पित करने के लिए सदैव उद्यत रहते थे। उनको केवल एक ही चिन्ता थी कि आर्य समाज का प्रसार अधिक से अधिक कैसे हो।

श्री आर्य एक उदारचेता व्यक्तित्व थे। उनका जीवन समाज व राष्ट्र के लिए समर्पित रहा। समाज के दीन-हीन, निर्धन, असहाय, विधवा, अनाथ, विकलांग व उपेक्षित जनों के कल्याणार्थ वे निरंतर प्रयत्नशील रहते थे। आर्यसमाज, गुरुकुल तथा आर्य संस्थाओं के उन्नयन तथा विकास एवं आर्ष साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए वे सदैव उद्यत रहते थे। वे अनेक आर्ष संस्थाओं के संरक्षक व अध्यक्ष रहे। ऐसे वन्दनीय देवतुल्य व्यक्तित्व पर हम सभी को गर्व है। हार्दिक श्रद्धांजलि।

आगामी कार्यक्रम

♦ 25 से 27 जनवरी, 2019- आर्यसमाज, इन्दिरानगर, बैंग्लुरू में वार्षिकोत्सव। ♦ 3 से 5 फरवरी, 2019- आर्यसमाज, धाता, जिला फतेहपुर में वार्षिकोत्सव। ♦ 1 से 3 मार्च, 2019- आर्यसमाज, पाणिनी नगर, जोधपुर में वार्षिकोत्सव। ♦ 22 से 24 मार्च, 2019- सलीमाबाद (गाजियाबाद) जन्मस्थली ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त। ♦ 29 से 31 मार्च, 2019- आर्ष गुरुकुल, दयानन्द वाणी, जिला- मधुबनी वार्षिकोत्सव। ♦ 1 से 3 फरवरी, 2019- केन्द्रीय आर्य युवक परिषद द्वारा 251 कुण्डीय विराट यज्ञ व अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन, स्थान : पंजाबी बाग स्टेडियम, रिंग रोड, नई दिल्ली।

अब आप आर्यावर्त केसरी के नियमित स्तम्भों में निरन्तर पढ़ते रहेंगे महत्वपूर्ण सामग्री

इन स्तम्भों के लिए सचित्र सामग्री प्रकाशनार्थ आमंत्रित हैं

ये हैं आर्यावर्त केसरी के कुछ महत्वपूर्ण स्तम्भ

♦ ऐसे होते हैं आर्य, ♦ भारतवर्षीय गौशालाएं, ♦ प्रकाशित आर्ष साहित्य- पुस्तकों की समीक्षा, ♦ आर्य जगत की महान विभूतियां ♦ आर्य जगत के लोकोपयोगी न्यास (ट्रस्ट), ♦ आर्य जगत के गुरुकुल, ♦ आर्य जगत के प्रकाशक और प्रकाशन, ♦ आर्य जगत की ऐतिहासिक धरोहर, ♦ आर्य जगत के क्रांतिवीर- अमर सेनानी- शहीद, ♦ आर्य जगत के मूर्धन्य प्रवक्ता व तपस्वी सन्यासी वृन्द, ♦ आर्य जगत के भजनोपदेशक, ♦ आर्य जगत द्वारा संचालित प्रकल्प, ♦ आर्य जगत की शिक्षण संस्थाएं और काव्यजगत, योग भगाये रोग, खानपान और स्वास्थ्य जैसे अन्य कई नियमित कॉलम।

कृपया उपर्युक्त स्थाई कॉलमों (स्तम्भों) के लिए सचित्र सामग्री भेजें प्रकाशनार्थ। साथ ही, अपने प्रियजनों को दें जन्म दिवस आदि की हार्दिक शुभकामनाएं तथा दिवंगत दिव्यात्मनों का करें भावपूर्ण स्मरण।

आर्यावर्त केसरी के इस अत्यन्त व्यय साध्य, समय साध्य व श्रम साध्य प्रकाशन यज्ञ में आपकी तन-मन-धन से सहयोग रूपी पावन आहुति भी सादर निवेदित हैं। मंगलकामनाओं सहित,

– डॉ० अशोक कुमार आर्य, सम्पादक (9412139333)

टंकारा चलो...

३ मार्च से टंकारा में होगा भव्य बोधोत्सव

आर्यावर्त केसरी के नेतृत्व में जायेगा आर्यों का विशाल जत्था

टंकारा (राजकोट)। महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट प्रतिवर्ष ऋषि जन्मभूमि टंकारा में शिवरात्रि के अवसर पर ऋषि बोधोत्सव का भव्य आयोजन करता है। इस वर्ष 3 से 5 मार्च तक यहां भव्य बोधोत्सव का आयोजन किया जायेगा। इस अवसर पर 26 फरवरी से 4 मार्च तक आचार्य रामदेव के ब्रह्मत्व में ऋग्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन होगा। ट्रस्ट के मंत्री रामनाथ सहगल के अनुसार इस वर्ष डीएवी कॉलेज प्रबन्ध कत्री के प्रधान पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष होंगे तथा डीएवी ट्रस्ट के डॉ. रमेश आर्य एवं एस.के. शर्मा विशिष्ट अतिथि होंगे। कार्यक्रम में सत्यपाल पथिक व जगत वर्मा का भक्ति संगीत भी होगा।

टंकारा समाचार के संपादक अजय सहगल के अनुसार इस अवसर पर देशभर से बड़ी संख्या में आर्य विद्वान, संन्यासी वृन्द, नेतागण व प्रतिनिधि पधार रहे हैं।

आर्यावर्त केसरी के नेतृत्व में लगभग 400 आर्यजनों का विशेष जत्था भी कार्यक्रम में विशेष रूप से सहभागिता करेगा।

ज्ञातव्य है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की पावन जन्मभूमि टंकारा में ट्रस्ट का विशाल भवन, ऋषि जन्मभूमि, भव्य एवं आकर्षक यज्ञशाला, महर्षि दयानन्द गौशाला, उपदेशक महाविद्यालय तथा विशाल अतिथि भवन आज टंकारा की शोभा बढ़ा रहे हैं। यहां प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में श्रद्धालु पधारते हैं और कृतज्ञतापूर्वक युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती को नमन करते हैं। टंकारा में किये गये भव्य निर्माण एवं वर्ष-वर्ष चलने वाली परियोजनाओं तथा कार्यक्रमों के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा जिसके महामंत्री रामनाथ सहगल व प्रधान डॉ. पूनम सूरी हैं तथा अजय सहगल टंकारा वाले सहित अन्य विशिष्ट महानुभाव प्रमुख सहयोगी हैं, को विशेष श्रेय जाता है।

ट्रस्ट की ओर से विभिन्न प्रकल्प तथा ऋषि लंगर की व्यवस्था के लिए आर्थिक सहयोग देकर हम पुण्य के भागी बन सकते हैं। ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा-80जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

ये है टंकारा स्थित वह शिवालय जिसने 'मूलशंकर' को बनाया महर्षि दयानन्द सरस्वती। -केसरी

मॉरीशस में होगा अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव

नई दिल्ली। हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर ने समाज और मनुष्य के निर्माण में गीता के महत्व व कर्म के सिद्धांत को वैश्विक स्तर पर पहुंचाने की पहल करते हुए कुरुक्षेत्र व देश से बाहर पहली बार फरवरी 2019 में अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव का आयोजन मॉरीशस में हरियाणा सरकार के सहयोग से करवाने की घोषणा की।

ज्ञातव्य है कि इसी प्रकार दिल्ली के लालकिला के प्रांगण में पहली बार अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव-2018 की प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री खट्टर ने दिल्ली के लालकिला परिसर में आयोजित एक पत्रकार सम्मेलन में फरवरी 2019 में मॉरीशस में अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के आयोजन की जानकारी दी।

इस संबंध में कुरुक्षेत्र में गीता महोत्सव का 7 से 23 दिसम्बर 2018 तक आयोजन किया गया। इस महोत्सव में मॉरीशस के कला एवं संस्कृति मंत्री पधारे। मुख्यमंत्री मनोहरलाल ने कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव भविष्य में भी एक स्थाई कार्यक्रम हो, इसके लिए कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड को वैधानिक दर्जा दिया जाएगा। इस वर्ष मॉरीशस में अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव का आयोजन किया जायेगा, जिसमें भारत की ओर से विशेष रूप से भागीदारी होगी। मुख्यमंत्री ने बताया कि पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने भी अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में आने की अपनी सहमति दी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह, हरियाणा के राज्यपाल सत्यदेव नारायण आर्य, विदेश मंत्री सुषमा स्वराज, गुजरात के मुख्यमंत्री विजय रूपाणी, त्रिपुरा के राज्यपाल प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी, उड़ीसा के राज्यपाल प्रो. गणेशी लाल, असम के राज्यपाल प्रोफेसर जगदीश मुखी के अलावा कई देशों व राजनयिकों ने महोत्सव में आने की सहमति जताई है।

ओ३म् ओ३म्

ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट (पंजी.), नई दिल्ली

द्वारा आर्यसमाज, सी–606, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली में
19 जनवरी 2019 को प्रातः 10 से 2 बजे तक 'दयानन्द के सपनों का आर्य राष्ट्र'
विषय पर होगा राष्ट्रीय सेमिनार। देशभर से पधारेंगे मूर्धन्य मनीषी व चिन्तकगण

संक्षिप्त समाचार

रोहतक (हरियाणा)। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्वावधान में 27 जनवरी को दयानन्द मठ, रोहतक में प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन।

सोनीपत (हरियाणा)। 3-6 जनवरी आर्य समाज, सैक्टर-14, सोनीपत का वार्षिकोत्सव सम्पन्न।

आन्ध्र प्रदेश। 19 से 21 जनवरी आर्ष गुरुकुल अलिहाबाद के वार्षिकोत्सव।

दिल्ली। वेद प्रचार मण्डल पश्चिमी दिल्ली में वेद ज्ञान कक्षा 10 से 12 जनवरी रमेश नगर आर्यसमाज, नई दिल्ली में सम्पन्न।

अलीगढ़। 1 से 6 जनवरी तक 21 कुण्डीय विश्व कल्याण महायज्ञ, बापू धाम, सारसोल, अलीगढ़ में सम्पन्न होगा।

मध्य प्रदेश। 26 से 28 जनवरी तक गुरुकुल हरिपुर जुनानी का नवम वार्षिकोत्सव आर्यजनों की पावन उपस्थिति में सम्पन्न होने जा रहा है।

लखनऊ। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का 19 से 20 जनवरी से आर्य प्रतिनिधि सभा उप्र, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ का दो दिवसीय अंतरंग सभा का साधारण अधिवेशन एवं वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न होगा।

दादरी (हरियाणा)। कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, पंचगांव (दादरी) का 29वां वार्षिकोत्सव 24 व 25 फरवरी को गुरुकुल में होगा।

देहरादून। 12 से 20 मार्च तक वैदिक साधना आश्रम योग साधना एवं यजुर्वेद पारायण यज्ञ स्वामी चितेश्वरानन्द जी के ब्रह्मत्व में होगा।

दिल्ली। राजधर्म पत्रिका की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने पर 10 मार्च को आर्य युवा परिषद की ओर से कार्यक्रम होगा।

मिर्जापुर। 17 से 19 मार्च तक आर्यसमाज, भदोही (मिर्जापुर) का वार्षिकोत्सव आयोजित होगा।

बागपत। 10 से 17 मार्च तक चतुर्वेद पारायण यज्ञ एवं वार्षिकोत्सव, महानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, बरनावा (बागपत) में ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त जी की कर्मभूमि में होगा।

नई दिल्ली। 1 से 3 फरवरी तक पंजाबी बाग स्टेडियम, रिंग रोड, नई दिल्ली में 251 कुण्डीय अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन सम्पन्न होगा।

प्रयाग। प्रयाग की पावन भूमि (गंगा तट) पर कुंभ मेला-2019 सैक्टर-11 में (14 जनवरी से 19 फरवरी) के पावन अवसर पर वैदिक धर्म प्रचार शिविर में वेद मंत्रों द्वारा यज्ञ का आयोजन होगा।

बिजनौर। चतुर्वेद पारायण यज्ञ ग्राम स्वाहेड़ी (बिजनौर) में 13 से 19 फरवरी तक यज्ञ अरविन्द शास्त्री के ब्रह्मत्व में होगा।

बागपत। चतुर्वेद पारायण यज्ञ ग्राम मुलसम, जिला बागपत में 22 से 28 फरवरी तक यज्ञ अरविन्द शास्त्री के ब्रह्मत्व में होगा।

बहादुरगढ़ (हरियाणा)। विशाल सद्भावना गायत्री महायज्ञ 14 से 20 जनवरी तक प्राचीन शिव मंदिर, कांठ मंदिर निकट रेलवे स्टेशन, बहादुरगढ़ में मनाया जायेगा। यज्ञ के ब्रह्मा धर्म मुनि जी अधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ होंगे।

बिजनौर। आर्यसमाज आत्मानन्दधाम (बिजनौर) के तत्वावधान में 16 दिसम्बर को सत्संग का आयोजन किया गया।

रांची। आर्य समाज रांची एवं प्रतिनिधि सभा झारखण्ड का वार्षिकोत्सव 23 से 25 दिसम्बर को सम्पन्न हुआ।

अमृतसर। 23 दिसम्बर को आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द, अमृतसर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बड़ी श्रद्धा से मनाया गया, जिसमें स्वामी वेदप्रकाश सरस्वती, संचालक- आत्म प्रज्ञा आश्रम, बाधनी (नूरपुर) ने स्वामी श्रद्धानन्द के परोपकारी एवं बलिदानी जीवन पर प्रकाश डाला। अरुण कुमार भजनोपदेशक ने भजनों से ज्ञानवर्षा की।

♦ 23 दिसम्बर- आर्य समाज, भुवनेश्वर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न।

♦ 25 दिसम्बर- रामलीला मैदान, दिल्ली, शोभायात्रा। स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न।

♦ 25 दिसम्बर- भुज (कच्छ) गुजरात, वैदिक सत्संग शिविर संभ्रमण, स्वामी शान्तानन्द द्वारा हुआ। (कृष्णगोपाल आर्य-8107827572)

♦ 28 से 30 दिसम्बर- महावीर नगर (कोटा) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न।

♦ 3 से 6 जनवरी तक आर्य समाज सैक्टर- 14 सोनीपत का वार्षिकोत्सव मनाया गया।

♦ 5 से 6 जनवरी तक आर्य समाज मदासना, हवाई पट्टी मुरादाबाद का वार्षिकोत्सव मनाया गया, जिसमें वेदभिक्षु महावीर मुमुक्षु ब्रह्मा रहे।

♦ 10 से 12 जनवरी तक वेदप्रचार मण्डल द्वारा वेदज्ञान कक्षा आर्यसमाज रमेश नगर प्रथम ब्लॉक, नई दिल्ली में सम्पन्न हुई।

♦ 19 से 21 जनवरी तक गुरुकुल अलीहाबाद (आ0प्र0) का वार्षिकोत्सव मनाया जाएगा।

♦ 3 फरवरी को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि0) जालंधर की अंतरंग सभा के तत्वावधान में प्रान्तीय महासम्मेलन बरनाला में होगा।

♦ 29 से 31 मार्च, 2019- आर्ष गुरुकुल, दयानन्द वाणी, जिला- मधुबनी वार्षिकोत्सव।

धूमधाम से मना 46वां वार्षिकोत्सव

बस्ती (उ.प्र.)। आर्य समाज नई बाजार का 46वां वार्षिकोत्सव हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाया गया। इसमें सभा प्रधान ओमप्रकाश आर्य एवं महावीर मुमुक्ष ने ध्वजारोहण किया। मुरादाबाद से पधारे आचार्य मुमुक्ष ने कहा कि वैदिक संस्कृति अनेकता में एकता का संदेश देती है। आर्य किसी जाति का वाचक नहीं, बल्कि श्रेष्ठता का सूचक है।

इस अवसर पर एक विशाल एवं भव्य शोभायात्रा भी निकाली गयी, जिसका जगह-जगह पुष्प वर्षा तथा जलपान के द्वारा स्वागत किया गया। शोभायात्रा में विभिन्न समाजों के अलावा, हिन्दू युवा वाहिनी, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, हिन्दू जागरण मंच, विश्व हिन्दू वाहिनी, पतंजलि योग समिति, भारत स्वाभिमान आदि प्रमुख संगठनों ने भी हिस्सा लिया। आचार्य शैलेन्द्र शास्त्री, बहन अलका शास्त्री, पं0 राममगन आदि भजनोपदेशकों के भजनों से पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया।

उत्सव में विदुषी अलका शास्त्री ने कहा कि देश की उन्नति के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की।

समारोह में शैलेन्द्र शास्त्री ने कहा कि ईश्वर स्तुति प्रार्थना और उपासना का फल यह है कि साधक के लिए पहाड़ जैसा दुःख भी राई के समान महसूस होता है। अर्थात् दुख आने पर साधक घबराता नहीं अपितु धैर्यपूर्वक उसे सहन करते हुए युक्तिपूर्वक मुक्त हो जाता है।

इस चार दिवसीय वार्षिकोत्सव पर सार्वदेशिक आर्य वीरदल के प्रशिक्षक दिनेश आर्य के नेतृत्व में आर्यवीर एवं आर्य वीरांगनाओं के शौर्य का प्रदर्शन काफी रोचक रहा।

इस अवसर पर दिनेश आर्य ने कहा कि इस तरह के आयोजन सभी जिलों में होने से बेहतर राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है।

इस अवसर पर नगर पालिका अध्यक्षा रुपम मिश्रा व उनके पति पुष्कर मिश्र यजमान बने। यज्ञोपरान्त नगरपालिका अध्यक्षा ने कहा कि आर्यसमाज ही समाज को एक सही दिशा दे सकता है क्योंकि इसमें पाखण्ड व कुरीतियों का कोई स्थान नहीं है। सभा प्रधान ओमप्रकाश आर्य ने आर्यवीर एवं आर्य वीरांगनाओं को मैडल व प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया। संचालन गरुणध्वज पाण्डेय ने किया।

प्रतीक चिन्ह देते जिला प्रधान ओमप्रकाश आर्य व अन्य- केसरी

१०८ कुण्डीय यज्ञ १८ से

लखनऊ। सत्य नारायण वेद प्रचार ट्रस्ट एवं जिला वेद प्रचार संगठन लखनऊ द्वारा 108 कुण्डीय देवयज्ञ व सत्संग समन्वित पावन वेद कथा 18 से 20 जनवरी को आर्ष गुरुकुलम विद्या मन्दिर, गुरुकुल नगरम, निकट रसूलपुर कायस्थ, शुक्ला चौराहा, जानकीपुरम, लखनऊ में होगा।

वार्षिकोत्सव संपन्न

नोएडा। 9 दिसम्बर को आर्य समाज, सैक्टर-33, नोएडा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डॉ. वेदपाल के प्रवचन व पं. दिनेश पथिक (अमृतसर) के मधुर भजन हुए। समारोह में विशिष्ट अतिथि उपस्थित हुए।

दिव्य वेदकथा सम्पन्न

हापुड़। 5 दिसम्बर को आर्यसमाज, हापुड़ में आचार्य संजीव रूप (बदायूं) की मनोहर वेद, गीता कथा सोल्लास सम्पन्न हुई।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

नई दिल्ली। 9 दिसम्बर को आर्यसमाज, छत्तरपुर जेवीटीएस, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ।

राजस्थान पत्रिका राष्ट्रीय पुस्तक मेला जयपुर में आर्य समाज ने वैदिक साहित्य की स्टॉल लगाई, जिसका उद्देश्य लोगों को वेद, उपनिषद व दर्शन आदि सहित समस्त वैदिक साहित्य सरलता से उपलब्ध कराना रहा।
—अर्जुनदेव चड्ढा, पूर्व उपप्रधान राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा

श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् द्वारा आयोजित

वैदिक गुरुकुलीय शास्त्रीय प्रतिस्पर्धा

नई दिल्ली। श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् द्वारा आयोजित तथा मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित प्रथम वैदिक गुरुकुलीय शास्त्रीय प्रतिस्पर्धा 8-9 दिसम्बर, 2018 को गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली-49 के देवकीनन्दन सभागार में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुई। अनेक गुरुकुलों के संस्थापक एवं श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती के आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन से अष्टाध्यायीकण्ठपाठ एवं लेखन, धातुपाठकण्ठपाठ एवं लेखन, त्रिभाषीकोषकण्ठपाठ, वैदिक सिद्धांत प्रश्नमंच एवं शास्त्रार्थ-विमर्श (वाद-विवाद) सहित पांच प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन किया गया। वैदिक गुरुकुलीय शास्त्रीय प्रतिस्पर्धा के इस प्रथम संस्करण में 25 गुरुकुलों के 119 छात्र-छात्राओं ने पूर्ण पुरुषार्थ के साथ सहभागिता की। इन प्रतिस्पर्धाओं का संचालन वैदिक गुरुकुल परिषद् के सहमंत्री आचार्य डॉ0 धनंजय ने किया।

अवश्य पढ़ें - आज ही मंगाएं

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित संग्रहणीय पुस्तक

दयानन्द लघुग्रन्थ संग्रह

इसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत इन पांच पुस्तकों का संग्रह है-

- पंचमहायज्ञविधि
- आर्योद्देश्यरत्नमाला
- गोकरुणानिधि
- व्यवहारभानु
- आर्याभिविनयः

पृष्ठ : 212, मूल्य : 60/- रुपये

पुस्तकें वी०पी०पी०, रजिस्टर्ड डाक, रेलवे तथा ट्रांस्पोर्ट से भेजी जा सकती हैं। अधिक मंगाने पर विशेष छूट उपलब्ध है।

पता- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.) सम्पर्क सूत्र : 09412139333

त्रिदिवसीय धर्मजागृति महोत्सव सम्पन्न

डॉ० अशोक रस्तोगी
अफजलगढ़ (बिजनौर)

आर्य समाज का त्रिदिवसीय धर्म जागृति महोत्सव 30 नवम्बर से 2 दिसम्बर तक श्रद्धा एवं हर्षोल्लास के साथ डॉ0 अशोक रस्तोगी के कुशल व सशक्त संचालन में विधिवत् सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर यज्ञ, हवन, भजन, प्रवचन, सन्तति निर्माण, धर्म का स्वरूप, सुखी गृहस्थ का आधार, राष्ट्र के प्रति हमारा दायित्व, महर्षि दयानन्द सरस्वती आदि विषयों पर आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वानों ने सारगर्भित व्याख्यान दिये। मेरठ निवासी आचार्य संजय जी याज्ञिक ने मनुष्य को मानव बनने की प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आज हमें हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई बनने की नहीं अपितु श्रेष्ठ मानव बनने की आवश्यकता है। आज समाज को जाति, धर्म, भूमि, भाषा व संस्कृति के आधार पर बांटा जा रहा है। मानव-मानव के मध्य खाई उत्पन्न की जा रही है। ईश्वर ने तो मात्र नर-नारी का विभेद किया है। मानव-मानव का भेद तो स्वयं मानव ने किया है।

आर्य कन्या गुरुकुल, नजीबाबाद की प्राचार्या डॉ0 प्रियंवदा वेदभारती ने गुरु की व्याख्या करते हुए बताया कि बच्चे की प्रथम गुरु उसकी मां होती है, क्योंकि शिशु की शिक्षा मां के गर्भ में ही प्रारम्भ हो जाती है। उन्होंने कहा कि उत्तम माता वह है, जो निर्व्यसनी हो, धार्मिक हो, विदुषी, सात्विक आचरणी हो, श्रेष्ठ मार्ग प्रशस्त करने वाली हो। ओजस्वी भजनोपदेशक पं0 योगेश दत्त आर्य ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व पर भजनों के माध्यम से प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वाधीनता समर में क्रान्तिकारियों को प्रेरणा देने में दयानन्द सर्वथा अग्रणी थे। वे राष्ट्रोद्धारक, दलितोद्धारक, समाजोद्धारक, व युग प्रवर्तक थे। उन्होंने बाल गंगाधर तिलक से भी पूर्व स्वराज्य का उद्घोष किया था। उन्होंने धरती पर छाये अज्ञान, अविद्या, पाखण्ड, अस्पृश्यता, सतीप्रथा, विधवा-उद्धार, बालविवाह, आदि के सघन तिमिर को दूर भगाया था।

वरिष्ठ भजनोपदेशक पं0 विक्रमदेव आर्य ने संस्कार संबन्धी भजन सुनाते हुए कहा कि सरदार भगतसिंह की माता विद्यावती ने उन्हें शैशव में ही वीर पुरुषों की शौर्यगाथाएं सुनाकर और यज्ञ-संध्या आदि से सुसंस्कारित कर दिया था। तभी तो उन्होंने राष्ट्र की बलिवेदी पर हंसते-हंसते अपने प्राण न्योछावर कर दिये थे। सभी सत्रों का सशक्त, कुशल, व काव्यात्मक संचालन डॉ0 अशोक रस्तोगी ने किया। आयोजन में रिशव विश्नोई, सुरेशपाल आर्य, सुशील रास्तोगी, चरणसिंह आर्य, अवधेश आर्य, पूरण सिंह ध्यानी का विशेष योगदान रहा।

'डॉ० व्यथित' 'अनिल अग्रवाल स्मृति हिन्दी विभूषण श्री' सम्मान से अलंकृत

बिसौली। के0बी0 हिन्दी साहित्य समिति, बिसौली द्वारा 18 दिसम्बर 2018 को आयोजित 'अखिल भारतीय साहित्यकार सम्मान समारोह-2018' में जनपद के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ0 रामबहादुर 'व्यथित' को 'अनिल अग्रवाल स्मृति हिन्दी विभूषण श्री' सम्मान से अलंकृत किया गया। अखिल भारतीय सम्मान समारोह में 18 प्रान्तों क 115 वरिष्ठ साहित्यकारों को सम्मानित किया गया।

संस्थाध्यक्ष डॉ0 सतीश चन्द्र शर्मा 'सुधांशु', वरिष्ठ समाजसेवी अशोक खुराना एवं प्रवीण अग्रवाल ने डॉ0 रामबहादुर व्यथित को शाल ओढ़ाकर प्रशस्तिपत्र, प्रतीक चिह्न, एवं रु0 2100/- की राशि भेंट करके उनका अभिनन्दन किया। यह पुरस्कार डॉ0 व्यथित को उनकी समीक्षात्मक कृति 'दर्पण झूठ न बोले' के लिए दिया गया है। इससे पूर्व डॉ0 रामबहादुर 'व्यथित' को उनकी उल्लेखनीय साहित्यिक सेवाओं के लिए 'साहित्य सागर', 'राष्ट्रभाषा गौरव', 'हिन्दी साहित्य गौरव', 'साहित्य वाचस्पति', 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल सम्मान' तथा 'काव्य महारथी' आदि अलंकरणों से विभूषित किया जा चुका है। संस्थाध्यक्ष डॉ0 कमला माहेश्वरी ऐसाशिएट प्रोफेसर, वरिष्ठ समाजसेवी अशोक खुराना, डॉ0 इसहाक तबीब, डॉ0 अक्षत अशेष, सोनरूपा विशाल तथा पवन शंखधार ने डॉ0 व्यथित को उनकी इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाई दी।

आइए, प्रयाग (प्र+याग) की हवन भूमि पर यज्ञ करें

यह सर्वविदित है कि प्रयाग का कुम्भ व माघ मेला प्रसिद्ध है, और इस मेले में वैदिक धर्म की विभिन्न शाखाओं के साधु-संत अपने-अपने दार्शनिक विचारों/ मतों के प्रचार के लिए माहपर्यन्त आते हैं। इस वर्ष कुम्भ मेला दिनांक 15.01.2019 से 19.02.2019 तक चलेगा।

महर्षि दयानन्द जी ने हरिद्वार के कुम्भ मेले में स्वयं देखा था कि किस प्रकार से भोली-भाली जनता को धर्म के नाम पर ठगा जाता है। धर्म के नाम पर ठगविद्या को देखकर इस प्रकार के मेलों से महर्षि दयानन्द जी के मन में घृणा उत्पन्न हो गयी थी। और इसी कारण आर्य समाज इन मेलों को पाखण्ड मानते हुए सामान्य तौर पर दूर रहता है। हालांकि महर्षि जी के कालखण्ड की विडम्बनाओं के स्वरूप में वर्तमान समय में काफी परिवर्तन हो गया है, और ठगविद्या पर भी लगाम लगी है। जनमानस में जागरूकता तो बढ़ी है, किंतु आध्यात्मिक भूख के कारण 'किम् कर्तव्य मूर्खता' रूपी विडम्बना भी बनी हुई है। इसका सबसे बड़ा कारण वैदिक धर्म की विभिन्न शाखाओं की विरोधाभाषी विचारधाराओं का बना रहना है।

पिछले कई दशकों से हम आर्य समाजी भी समुचित तरीके से आम जनमानस को वैदिक धर्म के मूल तत्वों से अवगत कराने में असफल रहे हैं, और कहावत भी प्रचलित हो गयी कि दूसरों को जगाते-जगाते स्वयं सो गये आर्य समाजी।

पिछले कई दशकों से आर्य प्रतिनिधि सभा, प्रयाग अपने सहयोगी आर्य समाजों के सहयोग से यथासंभव जनजागरण करती आ रही है। इस बार और अच्छा कार्य करने की उम्मीद है। हम सभी आर्य समाजी विद्वानों, प्रचारकों, संतों को कुम्भ मेले का सदुपयोग हेतु सादर आमंत्रित करते हैं।

दानदाताओं से भी विनम्र अनुरोध है कि सात्विक दान देकर वैदिक धर्म के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु हमें सहयोग करें। जो संस्थाएं वैदिक धर्म/ आर्य समाज से संबन्धित प्रचार पत्रों/ पुस्तिका/ ट्रैक्ट निःशुल्क वितरण करना चाहती हैं, उनका भी स्वागत है। हमारा बैंकखाता (बचत) संख्या-24440100037154, बैंक ऑफ बड़ौदा, बांसमण्डी, प्रयागराज है, जिसका RTGSINEFT, IFSC कोड BARBOALBANS है।

निवेदक-
अजेय कुमार महरोत्रा, मंत्री
जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, इलाहाबाद

।। ओ३म् ।।

प्रो0 सुषमा गोगलानी
मो0 : 9582436134

प्रतिनिधि
अशोक कुमार गोगलानी
मो0 : 8587883198

HANDICRAFT

सुषमा कला केन्द्र
आकर्षक स्मृति चिन्ह तथा पारितोषिक सामग्री के लिए सम्पर्क करें।

-: मुख्य आकर्षण :-

पता : C-1/1904, चैरी काऊंटी, ग्रेटर नोएडा (वैस्ट)

यज्ञ अनुष्ठान में आहुतियां देते श्रद्धालु यजमान- केसरी

यज्ञ व अभिनन्दन समारोह सम्पन्न

जयभगवान आर्य (9991456619)
झज्जर (हरियाणा)।

स्वामी शक्तिवेश के अनुज पं० जयभगवान आर्य के संयोजकत्व में टीला सिलानी गेट मौहल्ले में वैदिक यज्ञ, भजन, प्रवचन व अभिनन्दन समारोह का भव्य आयोजन किया गया।

इस अवसर पर श्री आर्य ने कहा कि वैदिक ज्ञान सत्य पर आधारित विज्ञान की कसोटी पर खरा उतरता है। जो व्यक्ति वैदिक सिद्धान्तों का मन , वचन ,शरीर से आचरण में लाता है । उस का सर्वांगीण विकास होता है। ब्र. सुभाष आर्य यज्ञ के ब्रहमा रहे। कु. नम्रता आर्य, देवेन्द्र, विवेक, कुनाल आर्य होनहार बच्चो को वैदिक संस्कारों से ओतप्रोत करने के लिये मुख्य यजमान बनाया । 90 वर्षीय मा. पन सिहं जी आर्य कार्यक्रम के अध्यक्ष रहे। कार्यक्रम में संजय यादव ने कहा कि निष्काम भाव से परोपकार करने से जीवन सफल होता है, जिसकी कथनी में कोयल सी चहक, करणी में फूलों सी महक और प्रेम नरमी ही जिस की सुगंन्ध होती है, उसे ईश्वर का आनन्द मिलता है।

इस अवसर लाला रामअवतार, मामन सैनी, रतीराम आर्य, पं. रामकिशन दीक्षित, रामौतार दीक्षित, आत्माराम, शिवचरण , संजय यादव, चन्द्रपाल, प्रा. द्वारका प्रसाद आर्य प्रधान, भगवान सिहं आर्य, ओमप्रकाश शर्मा, रामकरण कलोई, ओमप्रकाश यादव, चमनलाल यादव तथा रोशनी देवी आदि उपस्थित रहे। पं० वेदप्रिय आर्य और भूराज प्रिय आर्य ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। यहां ऋषि लंगर के साथ ही कार्यकर्ता सम्मान भी हुआ।

वर चाहिए

वैदिक विचारों की 26 वर्षीय संस्कारित ब्राह्मण कन्या। प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल चोटीपुरा से। शिक्षा- बी0टैक0। हिन्दुस्तान एरोनैटिक्स, बंगलूरू में प्रबन्धक युवती हेतु आर्य समाजी परिवार का समकक्ष संस्कारित युवक चाहिए। सम्पर्क सूत्र : 8368508395, 9456274350

वधु चाहिए

आर्य परिवार, संस्कारित, आयु- 40 वर्ष, कद- 5 फुट 8 इंच, शिक्षा- स्नातक, व्यवसायी युवक हेतु आर्य परिवार की समकक्ष संस्कारित युवती चाहिए। सम्पर्क- 09457274984

वधु चाहिए

आर्य परिवार संस्कारित, यमुनानगर (हरियाणा) निवासी, जन्म 19 जुलाई 1982, कद 6 फुट, शिक्षा बी0ए0, अपना मकान व दुकान, व्यापार में संलग्न युवक हेतु आर्य समाज परिवार की समकक्ष संस्कारित युवती चाहिए। सम्पर्क सूत्र : 07404136582, 08607200203

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए, और चुनिए एक सुयोग्य जीवन-साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 250/- तथा तीन बार की रु. 350/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.) (चलभाष : 09412139333)

टंकारा चलो : आर्यावर्त केसरी के संयोजन में

टंकारा, अहमदाबाद, द्वारिकापुरीधाम, पोरबंदर तथा सोमनाथ आदि

ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा कार्यक्रम-2019

कार्यालय- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ.प्र.)

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव, टंकारा (गुजरात) यात्रा- 26 फरवरी से 06 मार्च 2019 तक

प्रस्थान : 26 फरवरी 2019 को प्रात: 7 बजे मुरादाबाद से आला हज़रत एक्सप्रेस 4311 अप द्वारा। (25 फरवरी 2019 विश्राम एवं रात्रि भोजन, आर्यसमाज मंदिर, गंज, स्टेशन रोड, मुरादाबाद)

वापसी : 06 मार्च 2019 को अमरोहा सायं 5:45 बजे आला हज़रत एक्सप्रेस से।

: परिभ्रमण कार्यक्रम :

- **अहमदाबाद, आर्यवन-रोजड़-** साबरमती आश्रम, अक्षरधाम, वानप्रस्थ साधक आश्रम, गुरुकुल आर्यवन आदि।
- **द्वारिकापुरीधाम-** चार धामों में से एक धाम द्वारिकाधीश मंदिर, गोमती गंगा, श्री कृष्ण महल, भेंटद्वारिका, रुक्मणी मन्दिर, गोपी तालाब, आदि।
- **नागेश्वर महादेव-** द्वादश ज्योतिर्लिंग में से एक नागेश्वर महादेव।
- **पोरबन्दर-** महात्मा गांधी का जन्मस्थल, आर्ष कन्या गुरुकुल, सुदामा महल, नक्षत्रशाला, भारतमाता मंदिर आदि।
- **भालका तीर्थ-** वह ऐतिहासिक स्थली, जहां योगेश्वर श्रीकृष्ण को तीर लगा था।
- **सोमनाथ तीर्थ तथा दीव-** ऐतिहासिक सोमनाथ मन्दिर तथा समुद्र दर्शन एवं 'लाइट एंड साउंड शो' का दिग्दर्शन।
- **ऋषि जन्मभूमि टंकारा-** महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली, ऐतिहासिक शिवालय, पावन नदी, गोशाला, टंकारा ट्रस्ट भवन तथा आर्यसमाज का परिभ्रमण एवं बोधोत्सव में सहभागिता।

: सहयोग राशि :

प्रस्थान से लेकर आगमन तक रेल-बस आरक्षण, भोजन, जलपान, आवास-निवास तथा परिभ्रमण की समुचित व्यवस्था आर्यावर्त केसरी- प्रबंध समिति द्वारा होगी।

इस यात्रा निमित्त कुल धनराशि रु० 4500/- (सीनियर सिटीजन के लिए रु० 4000/-) देय होगी, जिसमें से रिजर्वेशन तथा बुकिंग आदि व्यवस्थाओं के लिए रु० 2000/- की धनराशि दिनांक- 25 जनवरी 2019 तक नकद या आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के नाम से देय डिमांड ड्राफ्ट/चैक द्वारा कार्यालय के पते पर भेजनी आवश्यक होगी। शेष धनराशि यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व यथासमय सुविधानुसार जमा करानी अपेक्षित है। इसी प्रकार जो महानुभाव AC III में यात्रा करने के इच्छुक हों, उनके लिए भी आरक्षण की सुविधा उपलब्ध है। वातानुकूलित श्रेणी के लिए कुल रु० 2000/- तक अतिरिक्त धनराशि देय होगी, जिसमें से रिजर्वेशन तथा बुकिंग आदि व्यवस्थाओं के लिए रु० 3000/- की धनराशि अग्रिम देय होगी। शेष धनराशि यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व यथासमय सुविधानुसार जमा करानी अपेक्षित है। यह धनराशि आपके द्वारा 'आर्यावर्त केसरी' के भारतीय स्टेट बैंक शाखा- अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या- 30404724002, IFSC Code SBIN0000610 में जमा करायी जा सकती है। प्रदत्त धनरशि की रसीद कार्यालय द्वारा आपको तत्काल प्रेषित की जाएगी। विलम्ब से प्राप्त धनराशि की दशा में रिजर्वेशन सुनिश्चित नहीं हो पाते, जिससे भारी असुविधा हो सकती है। इसलिए जितनी शीघ्रता हो सके, अपनी धनराशि जमा करा दें। समुचित व्यवस्था में आपका पूर्ण सहयोग प्रार्थनीय है।

-: यात्रियों को आवश्यक निर्देश :-

● गाड़ी के निर्धारित समय से आधा घंटा पूर्व सम्बन्धित रेलवे स्टेशन पर पहुंचना। ● यात्रा में कम से कम सामान साथ रखें, ● ओढ़ने, बिछाने की चादर, टॉर्च, नोट बुक, पैन्सिल, परिचय-पत्र (आईडी प्रूफ), दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं तौलिया, शेविंग का सामान, तेल आदि। ● अपनी औषधि साथ रखें। ● आवास या निकट के दूरभाष नम्बर कोड सहित अपना पूरा पता, आयु सहित भेजें। ● आप कब और कहां किस प्रकार पहुंच रहे हैं, यह भी सूचित करें।

नोट :

१. परिस्थितिवश यात्रा की तिथियों तथा परिभ्रमण-स्थलों में आंशिक परिवर्तन का अधिकार संयोजक को होगा। २. यात्रा रेलगाड़ी तथा डीलक्स बसों द्वारा संपन्न होगी। ३. आवासीय व्यवस्था ट्रस्ट अथवा तीर्थस्थलों पर उपलब्ध व्यवस्था के अन्तर्गत रहेगी। यदि कोई महानुभाव होटल में रुकना चाहते हों, तो इस सुविधा के लिए होटल का वास्तविक शुल्क अलग से देय होगा, जिसके लिए पूर्व में अवगत कराना होगा, अथवा यह व्यवस्था यथासंभव उपलब्धता पर निर्भर रहेगी। कोटिश: धन्यवाद;

आओ! ऋषि जन्मभूमि की यात्रा का पावन कार्यक्रम बनाएं...

-डॉ. अशोक कुमार आर्य, यात्रा संयोजक एवं संपादक- आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कालोनी, निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ०प्र०)- 244221
(चलभाष : 09412139333, 8630822099)

❐ हरिश्चन्द्र आर्य- अधिष्ठाता (05922-263412), ❐ अभय आर्य (9927047364),
नरेन्द्रकांत गर्ग- व्यवस्थापक (09837809405),
❐ सुमन कुमार वैदिक- सह व्यवस्थापक (09456274350)

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में अर्जुनदेव चड्ढा एवं रामचरण आर्य का सम्मान

आचार्य अग्निमित्र शास्त्री
कोटा (राजस्थान)।

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 में सक्रियता पूर्वक कार्य करने के लिए आर्य समाज कोटा के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा एवं रामचरण आर्य का दिल्ली में सम्मान किया गया।

इस अवसर पर आर्य समाज पंजाबी बाग में आयोजित समारोह में आर्य शिरोमणि महाशय धर्मपाल की उपस्थिति में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान धर्मपाल आर्य एवं महामंत्री विनय आर्य ने आर्य परिवार युवक–युवती वैवाहिक महासम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा एवं समिति के सह संयोजक रामचरण आर्य को सम्मानित किया। सम्मान के इस अवसर पर अर्जुनदेव चड्ढा एचं रामचरण आर्य को ओउम का केसरिया पटका पहनाकर अभिवादन किया गया साथ ही स्मृति चिन्ह एवं अभिनंदन पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

उल्लेखनीय है कि वैवाहिक परिचय सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में अबतक 22 परिचय सम्मेलन सफलतापूर्वक आयोजित किये जा चुके हैं, जिसमें से 21वां एवं 22वां परिचय सम्मेलन अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर दिल्ली में आयोजित किया गया।

सम्मान के इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एमडीएच प्रमुख महाशय धर्मपाल ने अर्जुनदेव चड्ढा को निकट बुलाकर उनके सिर पर दोनों हाथ रखकर आर्य समाज का और अधिक उर्जा के साथ कार्य करने की प्रेरणा देते हुए आशीर्वाद प्रदान किया।

समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सतीश चड्ढा अरूण वर्मा, जोगेंद्र खट्टर, सुरेंद्र चौधरी, योगेश आर्य, सुरेंद्र गुप्ता, ओम प्रकाश आर्य तथा श्रीमती उषा किरण, विभा आर्या सहित महासम्मेलन में विभिन्न समितियों के माध्यम से सक्रियतापूर्वक कार्य करने वाले आर्यजन उपस्थित रहे।

विशिष्ट कार्य करने के उपलक्ष्य में कोटा के प्रसिद्ध समाजसेवी डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता एवं वैदिक विद्वान आचार्य अग्निमित्र शास्त्री का राजस्थान जनमंच संस्था द्वारा राजस्थान चेंबर ऑफ कॉमर्स के मोहनलाल सुखाड़िया ऑडिटोरियम में 'समाज रत्न' से सम्मानित किया गया। बधाई –केसरी

आर्य समाज बारां (कोटा) का निर्वाचन

प्रधान– दिनेश व्यास
उपप्रधान–योगेश्वर स्वरूप भटनागर
मंत्री– नेमीचंद नागर
उपमंत्री– सत्यप्रकाश साहू
कोषाध्यक्ष–रामदयाल नागर
पुस्तकालय अध्यक्ष– मुरलीमनोहर सुमन
अन्तरंग सदस्य– गजानन मेहता, हेमेंद्र विजयवर्गीय, मुकेश गर्ग, ओम प्रकाश सोनी, लालचंद नागर, गायत्री नागर एवं प्रतीक्षा विजय अंतरंग सदस्य बनाये गए।

आर्य समाज ने निराश्रित बच्चों के बीच किया देव यज्ञ

राधावल्लभ राठौर
कोटा।

आर्य समाज कुन्हाड़ी द्वारा रंगबाड़ी कोटा स्थित निराश्रित बालगृह मधुर स्मृति संस्थान में 31 दिसम्बर को निराश्रित बच्चों के साथ देव यज्ञ एवं वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया।

इस बारे में जानकारी देते हुए कुन्हाड़ी आर्य समाज के प्रधान पूर्ण चंद मित्तल ने बताया कि आर्य समाज की वयोवृद्ध सदस्य श्रीमती बादामी देवी की पुण्यतिथि के अवसर पर कुन्हाड़ी आर्य समाज के सदस्यों द्वारा निराश्रित बालगृह में आचार्य अग्निमित्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में अग्निहोत्र पूर्वक देवयज्ञ किया गया। इस अवसर पर आचार्य जी ने बालकों से कहा कि जीवन में परिश्रम और तप करते रहने से ही सफलता मिलती है। इस अवसर पर आर्य समाज कोटा के अर्जुनदेव चड्ढा ने

अपने संबोधन में कहा कि बालक स्वयं को कभी अकेले महसूस न करें। आर्य समाज परिवार की तरह उनके साथ हमेशा उपस्थित रहता है। आप मन लगाकर पढ़ें और अपने लक्ष्यों को पूरा करें। कार्यक्रम में डीएवी के धर्मशिक्षक पंडित शोभाराम आर्य ने बच्चों से कहा कि जैसे यज्ञ सर्वश्रेष्ठ कर्म है वैसे ही अपने जीवन में श्रेष्ठतम कार्य करते हुए आगे बढ़ना चाहिए। वैदिक सत्संग में आर्य समाज के प्रधान पूर्ण चंद मित्तल ने साथ ही मधु स्मृति संस्थान की निर्देशिका बृजबाला निर्भीक और संस्थान के बच्चों ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किए। सत्संग के पश्चात आर्य समाज द्वारा श्रीमती बादामी देवी की पुण्य स्मृति में बच्चों के लिए ऋषि लंगर भोजन की व्यवस्था की गई।

इस अवसर पर वेदमित्र वैदिक, पी.सी. मित्तल, सरोज मित्तल, मुकेश पालीवाल, सुषमा पालीवाल, डी.एल. आर्य, राधा मित्तल एवं बंटी आर्य सहित आर्य समाज के सदस्य उपस्थित रहे।

डी.ए.वी. स्कूल में इन्वेस्टीएचर सेरेमनी का आयोजन

कोटा (सरिता रंजन गौतम, प्राचार्या)। डीएवी पब्लिक स्कूल में छात्रों के व्यक्तित्व निर्माण और उनमें नेतृत्व के गुण विकसित करने के लिए छात्र कार्यकारिणी का गठन किया गया। इस क्रम में मनुस्मृति शर्मा को हैडगर्ल और गौरांग तिवारी को हैड ब्वाय बनाया गया तथा गौरांग जैन और कनक शर्मा को कल्चरल हैड तथा आनंद चौरसिया और युक्ति गर्ग को स्पोर्ट्स् हैड चुना गया। जूनियर वर्ग में वेदांग जैमन को हैडब्वाय तथा शुभि शर्मा को हैडगर्ल के रूप शपथ दिलाई। इस अवसर पर नगर विकास न्यास, कोटा के चैयरमेन रामकुमार मेहता ने मुख्य अतिथि के रूप में पधार कर लाल चम्पा के पौधे का रोपण किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में आर्य नेता अर्जुनदेव चड्डा ने महर्षि दयानंद सरस्वती के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला।

बच्चों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने सभी का मन मोह लिया। प्राचार्या सरिता रंजन गौतम ने कहा कि लीडरशीप के लिये आत्मानुशासन, दृढ़ निश्चय और स्वयं पहल करना आवश्यक है। डीएवी बचपन से ही बच्चों में 'लीडरशिप स्किल' विकसित करता है जिससे वे भविष्य में एक योग्य लीडर बन सकें और सफलता के नये आयाम स्थापित कर सके। इस अवसर पर बड़ी संख्या में अभिभावक भी उपस्थित थे।

गणतंत्र दिवस पर विशेष

वन्दे मातरम् क्यों नहीं?

दुनिया के अधिकांश राष्ट्रगीत उस देश के संघर्ष के समय बने। सभी देशों को अपने राष्ट्रगीत पर नाज होता है। उनके नागरिक उसे गाने में गर्व का अनुभव करते हैं। हमारे देश का राष्ट्रगीत और राष्ट्रगान दोनों हैं। परन्तु अजीब विडम्बना है कि हमारे देश में असंदिग्ध सम्मान का अधिकारी वह राष्ट्रगीत भी नहीं है, जिसे गाकर स्वतंत्रता के दीवाने फांसी पर झूल गये। अंग्रेजी दासता के काल में जिसे गाना एक अपराध कृत्य माना जाता था, स्वतंत्रता के पश्चात् उसे गंगा-जमुनी संस्कृति का विरोधी माना जाने लगा। मुसलमानों और उनके समर्थकों को इसमें साम्प्रदायिकता और संकीर्ण मानसिकता दिखाई देने लगी। मातृभूमि की वन्दना को रोकने के लिए बीच में खुदा आ गया। उनको दिक्कत यह लगी कि वन्देमातरम् गाना जिस उपन्यास से लिया गया है, वह मुसलमान और अंग्रेजों के विरुद्ध है, जिसमें मातृभूमि को म्लेच्छों से खाली करने का आह्वान किया गया है।

वन्देमातरम् के जिन दो छन्दों को राष्ट्रगान के रूप में अपनाया गया है, उनमें म्लेच्छों से देश खाली कराने को कहीं नहीं कहा गया है। प्रथम दो छंद तो पूर्णत: विशेषणों से भरपूर हैं। जो बंकिम चन्द्र चटर्जी ने आनन्द मठ में 1842 में लिखा।

वन्दे मातरम्।
सुजलां सुफलां मलयज शीतलाम्
शस्यश्यामलां मातरम्।
शुभ्रज्योत्स्नाम् पुलकित यामिनीम्
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्।
वंदे मातरम्।

इसमें कहां है म्लेच्छों और उनसे मातृभूमि खाली कराने के उद्गार? यह एक विडम्बना ही है कि जो गीत गुलामी के विरुद्ध भारतवासियों को जोड़ने का मूलमंत्र बना, स्वतंत्र भारत में साम्प्रदायिकता का शिकार बन रहा है। सांप्रदायिक विभाजन इस गीत में नहीं, मुस्लिमों के तुष्टिकरण से वोट प्राप्त करने वालों में है।

10 मार्च सन् 2004 को आगरा में 54 मुसलमानों को गैर-इस्लामी घोषित कर दिया गया, जिन्होंने कहा था कि ''वंदेमातरम् गाना गैर इस्लामी नहीं है।'' मुफ्ती अब्दुल कुद्दूस रूमी ने फतवा जारी कर कहा था कि राष्ट्रगान का गायन उन मुस्लिमों को जहन्नुम में पहुंचाएगा।

आश्चर्य की बात है कि आपराधिक गतिविधियों में शामिल होना, आतंकवाद फैलाना, राष्ट्रद्रोह, झूठ, धोखा, हिंसा, हत्या, असहिष्णुता, शराब पीना, जुआ, तस्करी, नशा जैसे कृत्य से कोई जहन्नुम नहीं जाता, मगर देशभक्ति का जोश भरने वाला राष्ट्रगीत गाने से, मातृभूमि की पूजा करने से व्यक्ति जहन्नुम जाने का फतवा प्राप्त कर लेता है।

आजादी से पूर्व और उसके पश्चात् भी दशकों तक 'वंदेमातरम्' गैर-इस्लामी क्यों नहीं था? खिलाफत आन्दोलन अधिवेशन का प्रारम्भ वन्दे मातरम् गान के साथ होता था। 1896 से वन्दे मातरम् का गाना कांग्रेस के अधिवेशन में प्रारम्भ हुआ। 1906 में अंग्रेज सरकार ने वन्दे मातरम् का किसी अधिवेशन, जुलूस या सार्वजनिक स्थल पर गाने से प्रतिबन्ध कर दिया। आदेश के उल्लंघन पर 14 अप्रैल 1906 में वन्दे मातरम् के बैज लगाये लोगों के जुलूस पर लाठी चार्ज किया गया। अगले दिन कांग्रेस का अधिवेशन फिर वन्दे मातरम् के उद्घोष से प्रारम्भ हुआ। 1906 में अरविन्द घोष ने वन्दे मातरम् दैनिक निकालना प्रारम्भ किया।

स्कूलों में 'वन्दे मातरम्' को गर्ल्स कालेज की दैनिक प्रार्थनाओं में शामिल किया गया। 1905 में गांधी जी ने लिखा कि "यह पवित्र भक्तिपरक और भावनात्मक गीत लगता है। इसमें हमारी मातृभूमि के लिए जो अनेक सार्थक विशेषण प्रयुक्त किये गये हैं, वे एकदम अनुकूल हैं। इनका कोई सानी नहीं है।" वोट राजनीति तुष्टिकरण ने इसे साम्प्रदायिक बना दिया।

हमारे मुस्लिम भाई कहते हैं कि हमारा इस्लाम हमें इसकी इजाजत नहीं देता। कोई बात नहीं। मत गाओ, पर इसका सम्मान तो करो, क्योंकि यह संविधान में राष्ट्रगीत घोषित है।

आओ वन्देमातरम् जैसे राष्ट्रगीत पर किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह से बचें और मिलकर राष्ट्र के इस महान गीत का गायन करें।

-अतिथि सम्पादकीय- सुमन कुमार वैदिक

आर्य समाज के प्रमुख स्तभ

वेद-वेदांग के प्रकाण्ड मनीषी

आर्यरत्न डॉ० विशुद्धानन्द मिश्र

डॉ० रामबहादुर 'व्यथित'

दिव्यात्माएं युगों में धरती पर अवतरित होती हैं। वे अपने दिव्य गुणों का आलोक पृथ्वी पर बिखेरती हैं। धरती का संताप स्वयं आत्मसात् करके वे जनता जनार्दन को अपना अमृतमय संदेश देती हैं और अपनी तपश्चर्या पूर्ण करके इहलोक से विदा होकर वे अन्तरिक्ष में विलीन हो जाती हैं। ऐसी दिव्यात्माएं जरा और मृत्यु के बन्धनों से परे होती हैं। अपने यश: शरीर से वे इस धरती पर सदैव विद्यमान रहती हैं-

''जयन्ति ते महाभागा: जनसेवापरायणा:।/ जरामृत्युभयं नास्ति येषां कीर्तितनो: क्वाचित्।।''

आर्य-रत्न, आचार्य-प्रवर डॉ0 विशुद्धानन्द मिश्र एक ऐसे ही तप: पूत ऋषि थे, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन मानव समाज के लिए समर्पित कर दिया, जो वेद-ज्ञान के प्रखर सूर्य होने के बावजूद अत्यंत सौम्य, सरल और विनम्र थे। जो संस्कृत, अरबी, फारसी के विद्वान होकर भी अहंकार से विमुक्त थे। संस्कृत के प्रकाण्ड मनीषी और यशस्वी कवि होने के उपरांत भी वे अपनी शिष्य-मण्डली को अथाह प्रेम और वात्सल्य बांटते थे। वृन्दावन विश्वविद्यालय के कुलपति होने के बाद भी जो अपनी सरलता और सादगी के लिए विख्यात थे, जिन्होंने जन-जन में सदैव अगाध स्नेह, करुणा और ममता की सुगन्ध बिखेरी, जो पारिजात की कुसुम-मंजरी की भांति यावज्जीवन ज्ञान की सुगन्ध वितरित करते रहे और स्वर्ग-प्रयाण के बाद आज भी जिनका दिव्य स्वरूप हमें धर्म के अग्निपथ पर अविचल भाव से चलने की प्रेरणा देता है।

आर्य जगत के प्रकाण्ड मनीषी, स्वतंत्रता संग्राम-सेनानी, उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान, सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के अध्यक्ष तथा गुरुकुल वृन्दावन स्नातक शोध संस्थान के अध्यक्ष आदि पदों को सुशोभित करने वाले आचार्य डॉ0 विशुद्धानन्द मिश्र का जन्म बदायूं जनपद के ग्राम पूठी (रसूलपुर) में 24 नवम्बर 1924 को हुआ था। आपके पूज्य पिताजी का नाम पं0 अयोध्या प्रसाद मिश्र था। आपने अपनी विलक्षण मेधा से शुक्ल यजुर्वेद कण्ठस्थ कर लिया था। आपने सिद्धांत शास्त्री, आयुर्वेद भास्कर, एम0ए0 (संस्कृत एवं हिन्दी), शास्त्री, आचार्य आदि उपाधियां उच्च श्रेणी में प्राप्त कीं। अनेक उच्च स्तरीय शिक्षण संस्थाओं ने आपको 'विद्या वारिधि', 'दर्शन वाचस्पति' 'विद्या वाचस्पति' आदि मानद उपाधियों से विभूषित किया।

डॉ0 मिश्र की धर्मपत्नी श्रीमती निर्मला मिश्र (जन्म 21 जून 1931, स्वर्गवास 18 जून 1994) परम विदुषी एवं संस्कारित महिला थीं। उन्हें पांच भाषाओं पर पूर्ण अधिकार था। पार्वती देवी आर्य कन्या इन्टर कालेज, बदायूं की प्रधानाचार्या के रूप में उन्होंने सराहनीय सेवा की, जिसके लिए उन्हें राज्यपाल महोदय द्वारा पुरस्कृत किया गया था। यह माता के पवित्र संस्कारों का ही परिणाम है कि डॉ0 मिश्र के परिवार के सभी सदस्य आज भी

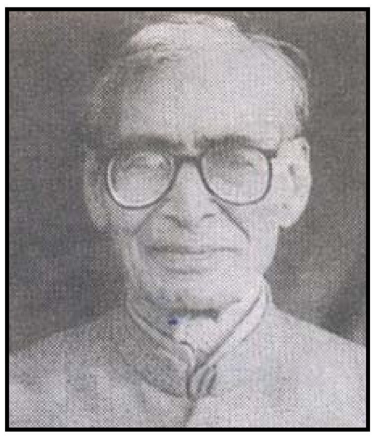

परस्पर संस्कृत में सम्भाषण करते हैं।

डॉ0 मिश्र ने गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन (मथुरा) के कुलपति पद को चार वर्ष तक सुशोभित किया। भारत सरकार द्वारा आपको राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली का तथा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा आपको उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी का माननीय सदस्य मनोनीत किया गया। श्रीकृष्ण इण्टर कालेज, बदायूं में संस्कृत प्रवक्ता पद पर सेवारत रहते हुए आपने सुर भारती की अनन्य सेवा की। आपने अपनी धर्मपत्नी के साथ अनेक संस्कृत संस्थानों की स्थापना की तथा जनपद बदायूं में स्वामी दयानन्द सरस्वती के पावन संस्कार आरोपित करके पुरातन सांस्कृतिक विरासत को कायम रखा। इस दम्पत्ति ने निरंतर 25 वर्षों तक आकाशवाणी से संस्कृत वार्ताओं एवं कविताओं का सुमधुर पाठ प्रस्तुत किया। यथा- कवि प्रत्येक भारतीय के लिए शाश्वत सुख-समृद्धि की कामना करता है-

''एकता अखण्डता-
चेतना-वर्षकम् जायतामृद्धि-
सिद्धि-प्रवृद्धिर्भुवि।
भारतीया जना: भ्रातृ-सौहार्दकम्।
धारयन्तां लभन्तां सुखं
शाश्वतम्।।''

(आर्याश्च के हिन्दव:- पृष्ठ 87)

डॉ0 विशुद्धानन्द मिश्र ने देववाणी में निम्नलिखित ग्रन्थों का प्रणयन किया-

1. वेदार्थ-कल्पद्रुम: (तीन खण्डों में), 2. सुखवाणी प्रशस्तिका, 3. चारुचरिताऽमृतम्, 4. गोकरुणानिधि-काव्यम्, 5. यास्कीय निघण्टु:, 6. वेदार्थभूमिका, 7. सत्यार्थ प्रकाश-प्रशस्तिकम्, 8. आर्याश्च के? हिन्दव:, 9. वने निर्वासिता सीता, तथा 10. प्रश्नोत्तर मंजरी।

हिन्दी में आपके द्वारा रचित ग्रन्थ निम्नवत् हैं-

1. वेदमंत्रों पर निर्दिष्ट ऋषि मन्त्रद्रष्टा थे मन्त्रकर्ता नहीं, 2. हृदय मीमांसा (जीवात्मा का शरीर में स्थान), 3. सुख-दुख की दर्शनिक मीमांसा, 4. क्या आयु निश्चित है?, 5. बिहारी- एक अध्ययन, 6. सुर- एक अध्ययन, 7. विद्यापति- एक अध्ययन, तथा 8. पृथ्वीराज विजय (संस्कृत-हिन्दी काव्य रूपान्तर)।

नवजागरण के पुरोधा, वेदवाक् के मर्मज्ञ, महान् शिक्षाविद्, महर्षि दयानन्द-दर्शन के सूत्रधार, वेद-वेदांग के प्रकाण्ड मनीषी डॉ0 विशुद्धानन्द मिश्र विद्वत्परिषद् में संस्कृत एवं हिन्दी में आशु कवि के रूप में अनेक बार सम्मानित हुए। आपने अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलनों, वैदिक संगोष्ठियों, अनेक दार्शनिक सभाओं एवं कवि सम्मेलनों में प्रमुख वक्ता अथवा अध्यक्ष पद को सुशोभित करते हुए अपने प्रखर पाण्डित्य का परिचय दिया। आपकी विलक्षण मेधा, अद्भुत वक्त्रता शैली, एवं प्रचुर काव्य-वैभव के लिए आपको संपूर्ण देश में दर्जनों पुरस्कारों एवं अलंकरणों से अभिषिक्त किया गया।

काल की गति निस्सीम है। भारत-भमि पर वेद-वेदांग एवं भारतीय-मनीषा के पावन स्वर गुंजायमान करने वाला यह प्रकाण्ड मनीषी 24 सितम्बर 2012 को इस असार संसार को छोड़कर द्युलोक में विलीन हो गया। हम शिष्यगण उस दिव्यलोक निवासी परम ज्योति को शत-शत प्रणाम करते हैं।

कविवर्य माहेश्वर तिवारी के शब्दों में-

''किसी को न हो सका उसके कद का अंदाजा,/ वो आसमान था और सर झुकाए बैठा था।''

-विजय वाटिका, कोठी नं०-३
सिविल लाइन, बदायूं

घर-घर तक पहुँचाएं कालजयी ग्रंथ
सत्यार्थ प्रकाश
मूल्य- ५०/-, १५०/-
प्रकाशक : आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)

'दीपशिखा' द्वारा किया गया विद्वानों को सम्मानित

डॉ० सुशील कुमार त्यागी
हरिद्वार।

'दीपशिखा' साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मंच ज्ञानोदय अकादमी, हरिद्वार द्वारा संस्था के स्थापना दिवस (2 नवम्बर, 2018) पर आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान, सम्पादक एवं लेखक डॉ0 विनोद चन्द्र विद्यालंकार तथा आर्य लेखक, संपादक एवं चिंतक डॉ0 सुरेन्द्र कुमार शर्मा को उनकी साहित्य-साधना के लिए 'मां लक्ष्मी देवी दीपशिखा सम्मान-2018' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर संस्था के संस्थापक अध्यक्ष वरिष्ठ साहित्यकार के0 एल0 दिवान, अध्यक्ष डॉ0 मीरा भारद्वाज, उपाध्यक्ष उमेश शर्मा, सचिव डॉ0 सुशील कुमार त्यागी 'अमित', सहसचिव जगदीश शर्मा शेषी द्वारा माला, दुशाला, सम्मान-पत्र तथा साहित्य भेंट कर डॉ0 विद्यालंकार एवं डॉ0 शर्मा को विभूषित किया गया।

संस्था के संस्थापक अध्यक्ष एवं वरिष्ठ साहित्यकार के0एल0 दिवान ने कहा कि दीपशिखा मंच की स्थापना 2 नवम्बर सन् 1992 में की गयी थी। उनका मानना है कि मां सरस्वती की कृपा और साहित्यकारों के प्रेम से संस्था 26 वर्षों का लम्बा सफर तय कर पायी। संस्था सचिव डॉ0 सुशील कुमार त्यागी 'अमित' ने कहा कि आर्य लेखक डॉ0 विनोद चन्द्र विद्यालंकार द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द : एक विलक्षण व्यक्तित्व, शतपथ के पथिक स्वामी समर्पणानन्द : एक बहुआयामी व्यक्तितव (दो खण्डों में), निःश्रेयस् (आर्य वानप्रस्थ आश्रम की हीरक जयन्ती स्मारिका), निहारिका, भारतीय संस्कृति के पुरोधा स्वामी श्रद्धानंद आदि अनेक ग्रन्थ रचित हैं। डॉ0 विद्यालंकार को दीर्घकालीन हिन्दी सेवा के लिए श्री जगन्नाथ स्मृति राजभाषा सम्मान, उत्तराखण्ड गौरव सम्मान, आर्य विभूषण सम्मान आदि अनेक सम्मनों से विभूषित किया जा चुका है। इसी प्रकार हिन्दी संस्कृत के विशिष्ट विद्वान, सम्पादक एवं आर्य लेखक डॉ0 सुरेन्द्र कुमार शर्मा को हिमानी हिंदी व्याकरण, हिंदी प्रतियोगिता प्रश्नोत्तरी, अनंत की ओर, बंदियों की आत्मकथाएं आदि रचनाएं विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। वर्तमान में आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर से प्रकाशित 'स्वस्ति पंथा' पत्रिका का कुशल संपादन एवं लेखन में संलग्न हैं। डॉ0 शर्मा को उनकी साहित्य साधना के लिए भी अनेक शिक्षण एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। इस अवसर पर जनसेवा भावना के लिए डॉ0 नारायण पंडित को भी ज्ञानोदय अकादमी

दीपशिखा सम्मान 2018 से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर काव्यगोष्ठी का भी आयोजन किया गया, जिसमें हरिद्वार नगर के डॉ0 बुद्धप्रकाश शुक्ल, डॉ0 श्याम बनोधा तालिब, गांगेय कमल, जगदीश शर्मा, डॉ0 सुशील कुमार त्यागी, 'अमित', डॉ0 विनोद चन्द्र विद्यालंकार, डॉ0 सुरेन्द्र कुमार शर्मा, के0एल0 दिवान, ज्वालाप्रसाद शांडिल्य, उमेश शर्मा, डॉ0 मीरा भारद्वाज, डॉ0 नारायण पंडित आदि साहित्यकारों, कवियों, लेखकों ने अपनी-अपनी रचनाएं प्रस्तुत कर वाहवाही लूटी। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ0 मीरा भारद्वाज, तथा संचालन कवि एवं कहानीकार ए0एल0 दिवान ने किया।

गरबा महोत्सव में कराया वैदिक साहित्य उपलब्ध

अर्जुनदेव चड्ढा
कोटा।

जिला सभा के तत्वावधान में कोटा के गुजराती समाज भवन में स्थित गरबा पण्डाल में जाकर आर्य समाज कोटा ने नवरात्रि में मनाये जा रहे गरबा महोत्सव में आम जनों को वैदिक साहित्य उपलब्ध कराया।

इस अवसर पर मुख्य रूप से गुजराती भाषा में सत्यार्थप्रकाश ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका एवं अन्य वैदिक आध्यात्मिक साहित्य अवलोकनार्थ रखा गया। बड़ी संख्या में उपस्थित लोगों ने सत्यार्थ प्रकाश क्रय किये। इस अवसर पर आर्य समाज कोटा के वैदिक विद्वान आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, गायत्री विहार के

प्रधान अरविंद पाण्डेय, मंत्री उमेश कुर्मी, योगाचार्य प्रदीप शर्मा, पं0 श्योराज वशिष्ठ, योग शिक्षक राकेश चड्ढा आदि ने उपस्थित रहकर वेद एवं वैदिक साहित्य संबंधी जानकारी प्रदान की।

आर्यसमाज ने मजदूरों के बच्चों को पहनाई चप्पलें

कोटा (अर्जुनदेव चड्ढा)। रीको इण्डस्ट्रियल एरिया, कोटा में स्थित मजदूरों की बस्ती में जाकर आर्य समाज कोटा के सदस्यों ने सामाजिक उत्तरदायित्व निर्वहन कार्यक्रम के अन्तर्गत वहां रह रहे मजदूरों के नन्हें-मुन्ने बच्चों को पप्पलें पहनाईं। इस अवसर पर जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के साथ मंत्री कैलाश बाहेती, डी0ए0वी0 धर्मशिक्षक शोभाराम आर्य, महावीर नगर प्रधान आर0सी0 आर्य, रावतभाटा से ओमप्रकाश आर्य उपस्थित रहे।

चौराहे पर आवाज लगाकर बांटे सत्यार्थप्रकाश

अर्जुनदेव चड्ढा
कोटा।

आर्य समाज जिला सभा कोटा के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में आर्य समाज के सदस्यों ने बूंदी के मुख्य चौराहे पर आमजन को महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश उपलब्ध कराया।

धर्मशिक्षक आचार्य शोभाराम आर्य, महावीरनगर के प्रधान आरसी आर्य, आर्य समाज बूंदी के प्रधान श्रीराम आर्य, एडवोकेट अभयदेव शर्मा सहित आर्यसमाज बूंदी के आर्यजनों द्वारा लोगों को बुलाकर 50 रुपये का सत्यार्थ प्रकाश मात्र 10 रुपये में उपलब्ध कराया गया।

'मागृधः कस्यस्विदधनम्' वचन श्रुति जीवन में अपने था पाला।
जीवन से भी अधिक रही प्रिय, उनको वैदिक मर्यादा माला।।
आर्य समाज प्रेम का प्रेरक-द्वेष दम्भ का नाशक है।
वैदिक धर्म दिवाकर का यह, उज्ज्वल ज्ञान प्रकाशक है।

लब्ध प्रतिष्ठित प्रसिद्ध साहित्यकार मुंशी प्रेमचन्द के उद्गार

आर्य भाषा सम्मेलन, आर्य समाज, लाहौर
के वार्षिकोत्सव पर दिया गया भाषण

मैं आर्य समाज को जितनी धार्मिक संस्था मानता हूँ, उतनी ही सांस्कृतिक संस्था भी समझता हूँ। बल्कि क्षमा करें, उसके सांस्कृतिक कारनामे धार्मिक से ज्यादा प्रसिद्ध है और रोशन हैं। आर्य समाज ने यह साबित कर दिखाया है कि सेवा का रचनात्मक कार्यक्रम ही किसी धर्म के सजीव होने का लक्षण है। समाजसेवा का कौनसा क्षेत्र है, जिसमें उसकी कीर्ति-ध्वजा न उड़ी हो। राष्ट्रीय जीवन की समस्याओं को हल करने में उसने जिस दूरदर्शिता का सबूत दिया है, उस पर गर्व कर सकते हैं। हरिजनों का उद्धार, लड़कियों की शिक्षा के लिए सबसे पहले उसी ने कदम उठाया। वर्ण-व्यवस्था को जन्मगत न मानकर कार्यगत सिद्ध करने का सेहरा भी आर्य समाज को ही है। जांति-पांति, भेदभाव, खान-पान, छुआ-छूत, चौका-चूल्हा तक ही धर्म की श्रेष्ठता को सीमित रखने के विरूद्ध प्रचार करना उसके प्रवर्तक स्वामी दयानन्द जी का ही प्रताप है। उन्होंने प्रगतिशील एक पक्ष को बड़े साहस से रखा- इसलिए उनका एहसान सारी कौम पर है ब्रह्म समाज ने हालांकि पहले क़दम रखा था- समाज सुधार के लिए। मगर वह अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों तक ही सीमित रह गया। ब्रह्म समाज एवं राजा राममोहन राय का प्रभाव तो पड़ा, लेकिन उनके विचारों का मूल स्रोत नहीं था। विदेशी नकल अधिक थी। लेकिन स्वामी दयानन्द एक अपना मौलिक दृष्टिकोण, जैसे मुल्क का ही पक्ष लेकर आये हों सबसे बड़ी बात यह है कि समाज के मानसिक और बौद्धिक धरातल को स्वामी दयानन्द यानी आर्य समाज ने जितना ऊँचा उठाया और किसी संस्था ने नहीं। इसका कोई सुधारवादी तहरीक मुकाबला नहीं कर सकती। वेदों और ऊँचे ज्ञान को जन साधारण की सम्पत्ति बना दिया, जिन पर पंडितों ने कई-कई लीवर के ताले लगा रखे थे। स्वामी दयानन्द का एक बड़ा उपकार कौमी जबान को है। उन्होंने ही तब महसूस किया और उसे कर दिखाया, जब इसका माहौल ऐसा नहीं था। गुजराती होते हुए उन्होंने राष्ट्र भाषा की अहमियत को समझा और अपना मशहूर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी में ही लिखा था। इसलिए शिक्षा-साक्षरता यानी भाषा के क्षेत्र में भी आर्य समाज एवं महर्षि का योगदान अभूतपूर्व है।

स्वयं मूल शंकर का है साकार यही, पाखंडी पतझड़ में सत्य बहार यही।
विश्व शान्ति की ऋजुता का आधार यही, विषमय दुनिया में है अमृत धार यही।।

23 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर आर्यजगत में हुए विशेष आयोजन

गुरुकुलीय संस्कृति के प्रतिपादक थे स्वामी श्रद्धानन्द

मुकेश कुमार 'ऋषि वर्मा'
आगरा।

होटल श्याम पैलेस, राजा की मंडी, आगरा में दो दिवसीय कार्यक्रम 'अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी बलिदान स्मृति दिवस' समारोह सम्पन्न हुआ। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा जनपद–आगरा के इस कार्यक्रम में साध्वी पुष्पा सरस्वती (रेवाड़ी) व दिनेश पथिक (जालंधर) का मुख्य सानिध्य रहा।

यज्ञ, भजन, प्रवचन की उत्तम व्यवस्था का यजमानों ने बड़ी श्रद्धा से लाभ प्राप्त किया। अलग–अलग सत्रों में उत्तम कार्यक्रम सम्पन्न हुए। दोनों दिवसों में सभी के लिए उत्तम भोजन की व्यवस्था भी जिला आर्यप्रतिनिधि सभा (आर्य समाज राजा की मंडी) ने की।

कार्यक्रम आयोजकों व सहयोगियों का ओ३म पट्टिका (अंग वस्त्र) पहनाकर स्वागत किया गया।

इस अवसर पर सोम प्रकाश शास्त्री, आ. विवेक शास्त्री, आ. विशवेन्द्र शास्त्री, महावीर आर्य, सोमव्रत आर्य, अनिकेत आर्य, ज्ञान प्रकाश आर्य, परमवीर आर्य (आर्य समाज सेवक) व मुकेश कुमार ऋषि वर्मा आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम की कुछ मनोरम झलकियों को यूट्यूब चैनल –कालेश्वर फिल्मस् पर देखा जा सकता है।

सच्चे समाज सुधारक थे स्वामी श्रद्धानंद

आर्यसमाज के उत्सव में स्वामी श्रद्धानन्द व चौ. चरण सिंह को किया नमन

गोण्डा (उ0प्र0)। स्वामी श्रद्धानंद के 92 वें बलिदान दिवस पर आर्य उपप्रतिनिधि सभा गोंडा/बलरामपुर के तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी छोटेलाल हाता में भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रभात फेरी निकाली गयी। सभा कार्यालय तृप्ति टावर पर स्वामी माधवराम यती के सानिध्य में देव यज्ञ के माध्यम से स्वामी श्रद्धानंद को श्रद्धांजलि दी गई।

आर्य समाज मकई, जानकीनगर, राधाकुण्ड, कौड़िया, बलरामपुर, गांव पूरे कालिका, नवाबगंज, वजीरगंज स्त्री समाज, श्रीदत्तगंज, तुलसीपुर, उतरौला, मनकापुर आदि समाजों के प्रतिनिधियों ने स्वामी जी के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

इस अवसर पर सभा प्रधान शास्त्री विनोद कुमार आर्य ने स्वामी श्रद्धानंद के जीवन की कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि इनका पूर्व नाम मुंशीराम था। इनका जन्म 2 फरवरी 1856 में जालंधर में हुआ था। पिता नानक चंद्र वैदिक विचारों से ओतप्रोत थे परंतु मुंशीराम अपने प्रारम्भिक जीवनकाल में पथभ्रमित हो गए थे। स्वामी दयानंद सरस्वती के बरेली सत्संग ने उन्हें जीवन का अनमोल आनंद दिया। सत्यार्थ

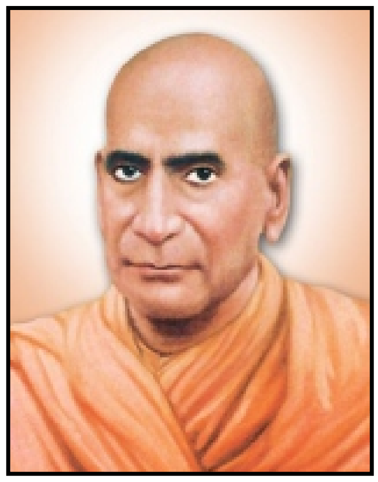

प्रकाश और स्वामी दयानंद सरस्वती से जो ऊर्जा मिली, वह पूरे विश्व के लिए प्रेरणादायी है। समाज सुधारक के रूप में उनके जीवन का अवलोकन करें तो प्रबल विरोध के बावजूद स्त्री शिक्षा के लिए अग्रणी भूमिका निभाई। गुरुकुल बनाने की प्रेरणा स्वयं की बेटी अमृतकला को जब उन्होंने 'ईसा–ईसा, बोल, तेरा क्या लगेगा मोल' गाते सुना तो घर–घर जाकर चंदा इकट्ठा कर गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय की स्थापना हरिद्वार में की, जो आज गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के नाम से पूरे विश्व में विख्यात है। उन्होंने इस गुरुकुल का शुभारंभ अपने बेटे हरीशचंद और इंद्र को लेकर किया। स्वामी जी ने शुद्धि आंदोलन चलाकर असंख्य व्यक्तियों को आर्य समाज के माध्यम से पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित कराया।

ऐसे महान क्रांतिकारी स्वामी श्रद्धानन्द की उनके निवास स्थान नया बाजार में 23 दिसम्बर 1926 को अब्दुल रशीद नामक एक उन्मादी व्यक्ति ने धर्मचर्चा के बहाने उनके कक्ष में प्रवेश करके गोली मारकर हत्या कर दी। इस तरह धर्म, देश, संस्कृति, शिक्षा और दलितों का उत्थान करने वाला महापुरुष सदा के लिए अमर हो गया।

इतिहास गवाह है कि स्वामी श्रद्धानन्द पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने दिल्ली की जामा मस्जिद की प्राचीर से वेद की ऋचाओं के माध्यम से समूचे राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने हेतु उद्बोधन किया था और आर्य मित्रों के सहयोग से समृद्ध प्रचारक नामक उर्दू साप्ताहिक समाचार पत्र का प्रकाशन किया, जिसके वे प्रधान संपादक रहे। उन्होंने देश के स्वतंत्रता आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभाई थी।

वार्षिकोत्सव पर चरण सिंह को किया याद :

गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी नगर के स्त्री आर्य समाज, मालवीय नगर का वार्षिकोत्सव 23 से 26 दिसम्बर तक मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ, भजन, उपदेश तथा युवाओं हेतु अंधविश्वास उन्मूलन आदि कार्यक्रमों का आयोजन हुआ जिसमें आचार्य सोमदेव शास्त्री, आचार्य योगेंद्र याज्ञिक, डॉक्टर भूपेंद्र आर्य के सानिध्य में महर्षि दयानंद के विचारों को जन–जन तक पहुंचाया गया। इस अवसर पर भारत के पूर्व प्रधानमंत्री एवं किसान मसीहा चौधरी चरण सिंह के 116वें जन्मदिवस पर याद किया गया। ये आर्य समाज के पुरोधा थे।

समारोह में नगर व क्षेत्र से भारी संख्या में श्रद्धालु आर्यजन उपस्थित रहे। संचालन जिला सभा के मंत्री जनार्दन प्रसाद पाठक ने किया।

चतुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

नोएडा (सुमन कुमार वैदिक)। गुरुकुल कांगड़ी के पूर्व कुलपति डॉ0 महावीर आचार्य के ब्रह्मत्व में चतुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। ध्वजारोहण ठा0 विक्रम सिंह (आर्य नेता) ने किया। सत्यपाल पथिक के भजन प्रतिदिन हुए। आनन्द चौहान कुलपति की अध्यक्षता में स्वामी श्रद्धानन्द (गुरुकुल गोमत), श्रीजी शास्त्री (गुरुकुल केरल), व म0 सुखपाल सिंह (मुजफ्फरनगर) का सम्मान किया गया। एक ब्रह्मचारी को स्वर्ण पदक प्रदान किया गया।

वेद ज्ञान की शुभ्र ज्योत्सना से आलोकित कर लो निजमन
मानुष जन्म सफल करने का एक मात्र यह ही है साधन

युग प्रवर्तक तत्ववेत्ता सत्य संशोधक महर्षि दयानन्द

धूल भरी आंधी से आच्छादित भारत को भव्य मनोरम बनाने के दृढ़ संकल्पी, अद्भुत आत्मबल के स्वामी तथा ओजस्वी लेखनी के धनी महर्षि दयानन्द ने अपने तेजस्वी भाषण लेखों सुभाषितों से भारत वासियों को उनके गौरवशाली अतीत से परिचित करवाकर स्वर्णिम भविष्य की कल्पना की प्रेरणा दी।

दयानन्द का जीवन चिन्तन तथा कार्य आपाद मस्तक स्वदेशी है। उनकी धर्मनीति राजनीति अर्थनीति तथा कार्य समाजनीति शत् प्रतिशत भारतीय है। तथा एतद्देशीय परम्पराओं से अनुमोदित है । उनका विचार संसार वेदों उपनिषदों वैदिक दर्शनों रामायण महाभारत आर्य इतिहासों से प्रेरित है तथा आर्ष स्मृतियों के तत्वों से प्रेरित है। दयानन्द के क्रान्तिकारी चिन्तन की यही विशेषता है। अवेदिक तथा भ्रान्त धारणाओं का समूलोच्छदन उनकी अपनी विशेषता है। यही उसकी उपादेयता है।

शंकर के बाद दयानन्द जैसे तेजस्वी व्यक्तित्व वाला सन्यासी इस भारत भूमि पर और कोई नहीं हुआ– क्रान्ति दर्शी दयानन्द ने ऐसी हलचल इस भू भाग पर पैदा की जिनसे राजनीतिक परिवर्तनों की श्रृंखला का प्रारंभ हुआ जिसकी परिणित भारत की स्वतंत्रता में हुई। दयानन्द ने विदेशियों की दासतां के भयंकर राष्ट्रीय अपमान की व्यथा को तीव्रता से अनुभव किया और इसका मूल कारण तत्कालीन भारतीय समाज की विकृति को समझकर उसके उन्मूलन करने का प्रबल अनथक प्रयास किया। जातिपाति, छुआछूत, बाल विवाह, विधवा विवाह, सती प्रथा, जैसे सामाजिक अन्याय, अज्ञान, अशिक्षा जैसी सामाजिक निर्बलताओं को दूर करने के लिए थोड़े से समय में ही दयानन्द ने अविश्वसनीय कार्य कर दिखाया यही नहीं इन दोषों का मूल कारण अज्ञान अविद्या अंधकार को जानकर समूल नष्ट करने के लिए दयानन्द ने वेदों के लुप्त प्रायः ईश्वरीय ज्ञान को पूरी सशक्तता के साथ प्रतिष्ठित किया, उन्होंने घोषणा की वेद अपौरूषेय एवं स्वतः प्रमाण है और ग्रन्थ परतः प्रमाण है।

वेद ज्ञान की कुंजी है। वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है।

जनता के हित में लगा रहा उनका अपना सारा जीवन
भा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन यह फ़ल कर दिया वेद वचन
वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धार्म है
आडम्बर अरू ढोंग घने थे, चहुँदिशि में घन ज्यों छाये।
संक्रामक उस युग में श्रीमन्, विश्व प्रभा बनकर तुम आये॥
महा मनीषी गैरिक अंचल-अभिनव था व्यक्तित्व तुम्हारा।
बल विक्रम के महाधनी तुम, हुआ प्रभावित जग यह सारा॥

प्रकाशक- आर्य उप प्रतिनिधि सभा, अमरोहा, आर्यावर्त कालोनी, अमरोहा–244221, मोबा. : 9412139333

काकोरी के अमर शहीद राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी को किया नमन्

गोण्डा/बलरामपुर। 17 दिसंबर 2018 क्रांतिकारी शहीद राजेंद्र नाथ लाहिड़ी के 92वें दिवस पर प्रात 7:30 बजे से लाहिड़ी प्रेरणा स्थल (आर्य समाज राधाकुंड) से आर्य उपप्रतिनिधि सभा गोंडा/बलरामपुर के प्रधान विनोद कुमार आर्य एवं धर्मवीर आर्य के नेतृत्व में वैदिक ध्वज दिखाकर प्रभात फेरी नगर के आर्यसमाजी व स्कूली बच्चों द्वारा मुख्यमार्ग से होते हुए पीपल चौराहा से फांसी स्थल जेल परिसर में पहुंचा वैदिक पुरोहित शास्त्री विमल कुमार आर्य व स्वामी माधवरामयति आर्य समाज बड़गांव अंतर्गत भव्य स्मृति यज्ञ का आयोजन हुआ जिसके मुख्य यज्ञमान जनपद न्यायाधीश जितेंद्र कुमार पांडे सपत्नी रहे। यज्ञ उपरांत सभा प्रधान/कार्यक्रम संचालन विनोद कुमार आर्य ने जनपद न्यायाधीश एडीजे संजय कुमार शुक्ल, दंडाधिकारी व जिलाधिकारी महोदय को क्रांतिकारियों की प्रेरणा स्रोत ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश की प्रति भेंट की और अपने उद्‍बोधन में शहीद लहिड़ी जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि काकोरी कांड के मुख्य अभियुक्त ठाकुर रोशन सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां व राजेंद्र नाथ लाहिड़ी को फांसी की सजा तिथि 19.12.1927 मुर्करर हुई परंतु गोण्डा आंदोलनकारियों का गड़ की वजह से राजेंद्र नाथ लाहिरी जी को 2 दिन पहले ही आज ही के दिन 17.12.1927 को गोंडा जेल में फांसी दे गयी थी और शहीद का लाश आर्य समाज के ही लोग लाल बिहारी टंडन, ईश्वर सरण बाबू छोटेलाल, गोरहा प्रसाद ने शहीद के परिवार के साथ प्राप्त कर वर्तमान नाम लहिड़ी स्थल पर दाह संस्कार हुआ और शांति यज्ञ आर्य समाज राधा कुंड में हुआ जो वर्तमान लहिड़ी प्रेरणा स्थल नाम दिया गया आर्य समाज बड़गांव के नेतृत्व जिले के सभी आर्य समाजी लोगों के सानिध्य में फांसी स्थल पर श्रद्धांजलि स्मृति यज्ञ, बलिदान पर करते हैं जिसमें जनपद न्यायाधीश जिला अधिकारी प्रमुख मान होते हैं समाज की प्रेरणा से ही देश की आजादी के बाद यज्ञ कुंड बनाया तभी से शांति यज्ञ होता है और बच्चों द्वारा शहीदों के प्रेरणा स्वरूप सांस्:तिक कार्यक्रम होते हैं जिससे मंडल के सभी अधिकारी व स्कूली बच्चों का विभिन्न संगठनों के लोगों बढ़.चढ़कर भाग लेते हैं शहीद के . त्यों से प्रेरणा लेते हैं इस अवसर पर जयप्रकाश शास्त्री, विनोद कुमार,सत्य प्रकाश आर्य, धर्मेंद्र कुमार, मनोज कुमार आर्यन स्वतंत्रता सेनानी अयोध्या प्रसाद गुप्त ज्ञान प्रकाश श्रीवास्तव रितेश कुमार शशि कांत पांडे, जनार्दन प्रसाद पाठक, लक्ष्मण सिंह आदि के माध्यम से श्रद्धा सुमन अर्पित की जेल अधीक्षक महोदय ने आए हुए सभी मंडल के सभी अधिकारीगण व समाजसेवी व सम्मानित निवासी गण के साथ स्वागत व अभिनंदन किया, और जी के कार्यों से लेकर देश पर शहीद क्रांतिकारियों के सपनों का भारत बनाए जाने का संकल्प लिया शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले वतन पर मरने वालों का बाकी यही निशा होगा

क्रान्तिकारी शहीद राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी के ९२वें दिवस पर यज्ञ करते यजमान- केसरी

राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी के स्मृति स्थल पर (समाधि) पर पुष्पजिंली करते विधायक पल्टूराम

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले
वतन पर मिटने वालों का यही बाकी निशां होगा

काकोरी के अमर शहीदों को शत-शत नमन्

वीरवर सेनानी

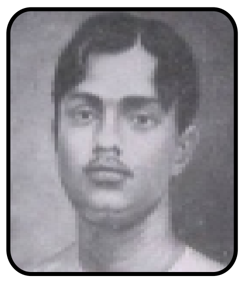
राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी

रामप्रसाद बिस्मिल

अशफाक उल्ला खां

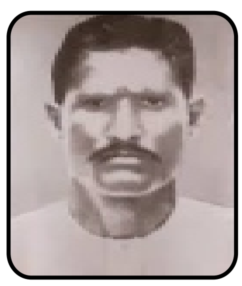
ठा० रोशनसिंह

तुलसा देवी हुकुमचन्द धर्मार्थ द्वारा विश्व पुस्तक मेले में सत्यार्थ प्रकाश का निशुल्क वितरण

सुमन कुमार वैदिक
नई दिल्ली।

योगाचार्य स्वामी ओमानन्द (इन्दौर) से दीक्षित स्वामी ब्रह्मानन्द जी (हिसार) ने गोविन्दराम हासानन्द से प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश में महापुरुषों की दृष्टि में महर्षि दयानन्द और सत्यार्थ प्रकाश जोड़कर माता तुलसादेवी हुकुमचन्द की धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन के तत्वावधान में विश्व पुस्तक मेले में सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क वितरण हेतु परोपकारिणी सभा अजमेर को भेंट की। जिसे परोपकारिणी सभा के मंत्री कन्हैलाल द्वारा विश्व पुस्तक मेले में 5 से 13 जनवरी तक परोपकारिणी के स्टॉल सं0 12 ए में ऐसे व्यक्तियों में वितरित किया गया, जिन तक यह अभी तक नहीं पहुंच पायी थी। ज्ञातव्य है कि परोपकारिणी सभा गत पांच वर्षों से क्रान्तिकारी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश को विश्व पुस्तक मेले में वितरित करती है, जिसके लिए मात्र दस रुपये लिये जाते हैं। वैदिक प्रचार-प्रसार के उद्‍देश्य से अपनी माता तुलसा देवी और पिता हुकुम चन्द्र की स्मृति में उनके नाम से बनाये धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन बनाया है। इस प्रकाशन द्वारा इनके द्वारा 'वैदिक रश्मियां' वेदसुधा, वैदिक सिद्धांतावलि, शिक्षाप्रद मनोरंजक कहानियां, वेदान्त दर्शनम् (स्वामी ब्रह्ममुनिकृत भाष्य) महर्षि दयानन्द सरस्वती संक्षिप्त रंगीन जीवन चरित्र (ट्रैक्ट), आर्य अभिनव विनय को समय समय पर प्रकाशित कर निशुल्क वितरित करते हैं। इसके साथ ही वर्ष में एक बार अप्रैल माह में अपने गुरु स्वामी ओमानन्द के संरक्षणता में योग शिविर लगवाते हैं। आर्यावर्त केसरी परिवार की ओर से महर्षि दयानन्द के मंतव्यों के ध्वजवाहक स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती के इस कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा करता है।

आर्यावर्त केसरी प्रबंध समिति के नेतृत्व में जनपद अमरोहा में हुए अनेक कार्यक्रम

१९ दिसम्बर को आर्यसमाज, जमना खास के मंत्री अनुराग त्यागी के परिवार में हुई सभा व भक्ति संगीत कार्यक्रम।

२० दिसम्बर को इण्टर कॉलेज, जमना खास में हुआ राष्ट्रभृत होम तथा श्री जवाहर नवोदय विद्यालय, बसेड़ा तगा में हुआ 'एक शाम शहीदों के नाम' कार्यक्रम।

देश के प्रसिद्ध भजनोपदेशक योगेश दत्त आर्य व महाशय जगमाल सिंह आर्य ने बहाई राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत गीतों की गंगा।

70वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

आर्यावर्त केसरी परिवार

आयुर्वेद द्वारा कैंसर की सफल चिकित्सा (स्वानुभूत)

आनन्ददेव शास्त्री

अक्टूबर 2015 में मुझे पेट में कुछ कष्ट रहने लगा, तब मैंने झज्जर के एक अस्पताल में अल्ट्रासाउण्ड कराया। अल्ट्रासाउण्ड से पता चला कि गदूद बढ़ने से पेशाब की थैली में 20 एम0एम0 की पथरी बन गयी है। इसी कारण पेशाब में रुकावट आने लगी है। तब किसी की सलाह पर मैंने सोनीपत के एक वैद्य से आयुर्वेदिक औषधि लेनी प्रारम्भ की। कुछ महीने के बाद मैंने वह औषध भी लेनी बन्द कर दी। गदूद बढ़ने की बात तो मेरे ध्यान से बिल्कुल उतर गयी। इस प्रकार असावधानी में एक वर्ष बीत गया तथा पेशाब की रुकावट बढ़ गयी। पेशाब की थैली वाली पथरी ने थैली में घाव कर दिया तथा पेशाब में कभी-कभी रक्त आने लगा। अक्टूबर 2016 में जब मैं डॉ0 धर्मवीर जी की अन्त्येष्टि पर अजमेर गया, उस समय मेरी स्थिति काफी खराब हो चुकी थी। अजमेर से आते ही मैंने महाराजा अग्रसेन अस्पताल, पंजाबी बाग, देहली में गदूद तथा पथरी का आपरेशन कराया। किंतु आपरेशन के कुछ समय बाद ही फिर पेशाब में रक्त का असर दिखाई देने लगा। तब मैंने फिर डॉक्टर के पास जाकर इसको ठीक करने को कहा, किंतु डॉक्टर ने कुछ विशेष ध्यान नहीं दिया तथा कहा कि ''खूब पानी पियो, ठीक हो जाओगे।'' जब ऐसा करते कई महीने बीत गये, किंतु रोग में कोई सुधार नहीं आया, तब मैं फिर अग्रसेन अस्पताल में उसी डॉक्टर के पास गया, तब डॉक्टर ने एक बार फिर आपरेशन का ड्रामा कर दिया तथा पानी की 20-25 बोतल चढ़ाकर रंग साफ कर दिया। किंतु कुछ समय बाद ही पेशाब का रंग फिर बदल गया। दूसरी बार आपरेशन करते समय डॉक्टर ने घाव में से टुकड़ा लेकर टैस्ट कराया तथा उसे इस बात का पता चला गया कि मुझे गदूद में कैंसर है। किंतु उस डॉक्टर ने न तो कुछ ईलाज ही किया, तथा न ही हमें इस विषय में कुछ बताया, तथा मुझे फिर ज्यादा पानी पीने का उपदेश देकर वापस भेज दिया। किंतु कैंसर के कारण पेशाब में खून का असर फिर भी बना रहा। अन्त में बिल्कुल लाचार होकर मार्च 2018 में हमने निश्चय किया कि अबकी बार दूसरा डॉक्टर बदलते हैं। तब मैं तथा छोटा बेटा प्रवीण कुमार, एक्शन कैंसर हॉस्पिटल, पश्चिम विहार, दिल्ली में गये। वहां डॉ0 समीर खन्ना ने देखते ही बता दिया कि तुम्हारे तो कैंसर है, तथा तुमने बहुत देर कर दी है। डॉ0 खन्ना ने मुझे कैंसर अस्पताल में दाखिल करा दिया। मेरे सभी आवश्यक टैस्ट करवाए तथा दो आपरेशन किये। इसके बाद पेशाब में खून आना बन्द हो गया तथा मुझे 10-15 दिन की दवाई देकर अस्पताल से डिस्चार्ज कर दिया। बेटे के पूछने पर डॉक्टर ने कहा कि कीमो थैरेपी करवा लो, कैंसर चौथे चरण में है। घर ले जाकर सेवा करो। और कोई उपाय नहीं है। चौथे चरण की बात मुझे नहीं बतायी गयी थी तथा यह भी नहीं बताया कि कैंसर गदूद में तथा ऊपर शरीर में हड्डियों में भी पहुंचा हुआ है। स्मरण रहे कि चौथे चरण में कैंसर के पहुंच जाने पर रोगी बचता नहीं है। यह जानकर प्रवीण को बड़ा धक्का लगा। किंतु अस्पताल में हमारे बैड के दोनों तरफ 'कीमो थैरेपी' लिए हुए रोगी थे, जिनकी हालत नाजुक थी। अतः हमने किमो थैरेपी की बजाय आयुर्वेद की चिकित्सा करने का निश्चय किया। तब प्रवीण ने नैट पर राजीव दीक्षित तथा एक अन्य भीलवाड़ा के वैद्य की दवाई पढ़ी तथा तीसरी दवाई गुरुकुल झज्जर फार्मेसी की भी सम्मिलित की। इन सभी दवाइयों को लेकर पूरे दिन का कार्यक्रम दवाई लेने का बनाया। इनका एक दिन का विवरण इस प्रकार है-

1- प्रातः उठते ही रोग ठीक होने के लिए ईश्वर से प्रार्थना। (एक बार अग्रसेन अस्पताल, पश्चिम विहार, दिल्ली के यूरोलाजी के डॉक्टर आर0के0 शर्मा ने भी मेरे सामने एक धनी आदमी को कहा था कि ऑपरेशन तो मैंने कर दिया है, ठीक होने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करो।)

2- प्रातः ही एक गिलास पानी खाली पेट पीना।

3- इसके आधा या एक घण्टे के बाद प्राणायाम, तथा दो चार आसन करने।

4- प्राणायाम से कुछ देर बाद गोमूत्र, हल्दी चूर्ण तथा पुनर्नवा चूर्ण से बना पेय 1 कप पीना। (इसके तैयार करने की पद्धति यह है कि 3 कप गोमूत्र लें, डेढ़ चम्मच छोटी हल्दी का चूर्ण लें, 1 चम्मच पुनर्नवा चूर्ण लें। सबको उबाल, ठण्डा कर इसमें तीन छोटी चम्मच शहद डाल लें। यदि कैंसर गदूद का न हो, तो पुनर्नवा चूर्ण न मिलाएं। बची औषधि फ्रिज में रख दें।)

5- इसके आधा या एक घण्टे बाद भोजन के साथ सब्जी, रोटी, लस्सी, तुलसी के 5-6 पत्ते, लहसुन की तीन कलियां लें तथा यदि कैंसर हड्डियों में भी पहुंच चुका है, तो दही में एक चुटकी खाने का चूना डालकर अच्छी तरह मिला लें, अन्यथा खांसी उठ सकती है।

6- भोजन के आधा या एक घण्टे बाद गुरुकुल झज्जर फार्मेसी का विषनाशकासव, विडंगारिष्ट तथा यदि कैंसर गदूद का हो, तो गोक्षुरासव भी ले लें। इन बोतलों में से 2-2 ढक्कन दवाई लेकर बराबर का पानी मिलाकर पियें।

7- इसके एक घण्टे बाद 1. गिलोय डेढ़ फुट लम्बी टहनी, 2. ग्वारपाठा (एलोवीरा) का गूदा 2 चम्मच, 3. पपीते का पत्ता 7-8 इंच, कुछ पपीते का डंठल भी ले लें, 4. नीम के 10 पत्ते, 5. पीपल के 6-7 पत्ते, 6. शीशम के 20 पत्ते, 7. तुलसी के 7-8 पत्ते, 8. पत्ता गोभी की एक परत, 9. कद्दू (पेठा भी कहते हैं) सब्जी वाले के 7-8 बीज, 10. अलसी के बीज 1 छोटी चम्मच, 11. कचनार का छिलका 2 छोटी चम्मच, 12. नागरमोथा 4-5 पीस, 13. शिलाजीत मक्खी से भी कम भाग।

इन सबको लगभग डेढ़ किलो पानी में डालकर उबालें। अच्छा उबलने पर तथा भगोने में पानी 1 इंच कम होने पर इस काढ़े के ठंडा होने पर 1 कप या डेढ़ कप सेवन करना।

8- दोपहर के खाने में गाय के दूध से बनी साबूदाने की खीर का निरंतर सेवन करना। इसके साथ कुछ अखरोट, बादाम, काजू भी सेवन करना।

9- दोपहर के खाने के एक घण्टा बाद 6 नम्बर वाली गुरुकुल झज्जर फार्मेसी की दवाई एक बार फिर लें।

10- इसके आधा या एक घण्टे बाद 7 नम्बर का काढ़ा फिर लें।

11- इस दौरान किसी समय उगा हुआ अनाज मूंग आदि थोड़ी मात्रा में सेवन करें।

12- गेहूं के ताजे पौधे काट कर 20-30 ग्राम लेकर, कूटकर उसमें थोड़ा सा पानी मिलाकर निचोड़ कर 1 कप के लगभग सेवन करें।

13- अंगूर या मुनक्का के बीज थोड़े-थोड़े पीस शहद में लेना।

14- गुरुकुल झज्जर फार्मेसी का विषनाशक चूर्ण 1 छोटी चम्मच तथा नीम का छिलका 1-1 इंच के दो पीस, 100 ग्राम के लगभग पानी में भिगो दें। तीन-चार घण्टे बाद छानकर उस पानी से गुरुकुल झज्जर फार्मेसी की विषनाशक वटी 1 गोली, कैशोर गुग्गुल 1 गोली, तथा यदि कैंसर गदूद में हो तो इसमें गोक्षुरादि गुग्गुल की भी एक गोली लेकर उसे पानी के साथ पीस कर लेना।

15- शाम के भोजन में कुछ सलाद भी लें।

16- भोजन के लगभग 1 घण्टा बाद थोड़ा गाय का दूध भी लें। यदि इन सब दवाइयों का कोई लगन से प्रतिदिन सेवन करेगा तो चौथे चरण (चौथी स्टेज) का असाध्य कैंसर भी छः महीने में ठीक हो जाएगा।

18- ऊपर की औषधादि के अतिरिक्त सेव, सन्तरा, अनार, पपीता आदि का भी यथासंभव सेवन करना।

19- इनमें से कड़वी दवाइयों से तो कैंसर नष्ट होता है, तथा खीर, मेवे, दूध, फल आदि के सेवन से नए सैल उत्पन्न होते हैं।

मैंने इन सभी चीजों का लगातार छः महीने तक लगन से सेवन किया। इससे मेरा आठ किलो वजन बढ़ गया तथा शरीर के सभी दर्द मिट गये।

मैं 27-09-2018 तथा 29-09-2018 को एक्शन कैंसर अस्पताल, पश्चिम विहार, दिल्ली में डॉ0 समीर खन्ना के पास गया तथा उनसे कैंसर का टैस्ट फिर कराने के लिए प्रार्थना की। जब डॉक्टर खन्ना ने मेरे कागज देखे, तब उन्हें बड़ा गुस्सा आया, तथा बोले- तुमने मेरी दवाई नहीं ली तथा छः महीने के बाद आए हो। तब मैंने डॉक्टर साहब से कहा कि मैंने आयुर्वेद से इजाल कराया है। आयुर्वेद का नाम सुनकर डॉक्टर साहब भड़क उठे, तथा बोले- जाओ, आयुर्वेद वालों से ही टैस्ट करा लो। तब मैंने कहा कि आयुर्वेद में टैस्ट नहीं होते तथा मेरा 8 किलो से ज्यादा वजन बढ़ गया है। मैं बाइक चलाता हूं, शरीर में कोई दर्द नहीं है। तब डॉक्टर साहब ने एक खून का टैस्ट तथा दूसरा पेट का सीटी स्कैन लिख दिया। दो-तीन दिन के बाद जब हम टैस्ट रिपोर्ट लेकर डॉक्टर साहब के पास गये, तो रिपोर्ट को देखकर डॉक्टर साहब को कुछ जवाब नहीं सूझा, तथा एक बार पुरानी और एक बार नयी रिपोर्ट को पलटने लगे, क्योंकि दोनों रिपोर्टों के अनुसार चौथे चरण में पहुंचा हुआ गदूद का कैंसर छः महीने की आयुर्वेद की दवाइयों के सेवन से पूर्ण रूप से ठीक हो चुका था। तब डॉ0 साहब बोले कि हम तो आयुर्वेद को नहीं मानते, फिर भी तुम्हारी बात सच है तथा मैं गलती पर था। डॉक्टर साहब शर्मिन्दगी महसूस करते हुए वहां से तुरन्त उठ गये।

सारांश- यदि किसी व्यक्ति को कैंसर है तथा उसने 'कीमो थैरेपी' नहीं ली है, तथा वह इन दवाइयों का छः महीने पूरी लगन से सेवन करे, तो उसका कैंसर चौथे चरण तक का अवश्य ठीक हो जाएगा। यदि किसी व्यक्ति को इस बात पर विश्वास न हो, तो मेरे पास रखे अस्पताल के कागज इसके प्रमाण हैं। कोई भी व्यक्ति उन्हें मेरे पास आकर देख सकता है।

-आर्य नगर, झज्जर, हरियाणा
फोन : ९९९६२२७३७७

आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा

ट्रैक्ट, लघु पुस्तक, संदर्भ ग्रन्थ, काव्य संग्रह तथा बहुरंगी पैम्फलेट, पोस्टर, विजिटिंग कार्ड आदि के प्रकाशन की उचित मूल्य पर सुविधा उपलब्ध है।

-व्यवस्थापक, आर्यावर्त प्रिन्टर्स, गोकुल विहार, अमरोहा
मोबा. : 9412139333

अराजकता, भ्रष्टाचार, शोषण, सरकारी लूट-खसोट, तानाशाही, बलात्कार, मुस्लिम तुष्टिकरण, कॉरपोरेट लूट

अमीर और भी अमीर / गरीब और भी गरीब ● जनता कंगाल नेता मालामाल

क्या इसी के लिए हम स्वतंत्र हुए थे?

हिन्दू हिन्दी हिन्दुस्तान- अब न सहेंगे हम अपमान

आइए, मिलकर इन सबके विरुद्ध एक नई आजादी के लिए संघर्ष करें

राष्ट्रभक्तों का संगठन

राष्ट्र निर्माण पार्टी

(भारत निर्वाचन आयोग द्वारा पंजीकृत राजनीतिक दल)

ठा० विक्रम सिंह- राष्ट्रीय अध्यक्ष **डॉ० वरुण वीर- राष्ट्रीय महासचिव**

क्षेत्रीय कार्यालय : ए-41, लाजपतनगर II, निकट- मैट्रो स्टेशन, नई दिल्ली- 24, फोन : 011-45791152, 29842527, 9313254938

प्रान्तीय कार्यालय : मोदीपुरम बाईपास, निकट- रेलवे फाटक, मेरठ (उ0प्र0), फोन : 0121-3191555, 9971284450, 9917063562

पवित्र बनो- सत्य का दर्शन होगा

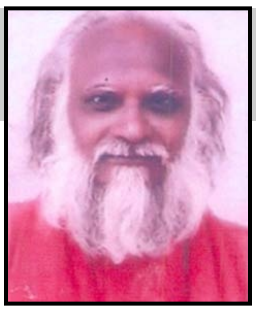

स्वामी दयानन्द विदेह

त्वया वयं पवमानेन सोम भरे कृतं वि चिनियाम शाश्वत्। तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः। (सा0 590)

पवित्रात्माओ!

यह सामवेद का मंत्र है। आपने चारों वेदों का नाम सुना है- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और चौथा अथर्ववेद।

सम से साम शब्द हो गया। इसी से समता शब्द का प्रयोग हुआ है। संसार में जो साधक हैं, साधिकाएं हैं, अथवा भक्त हैं, वे अपनी ध्यान साधना के द्वारा समता (एकीभाव) प्राप्त करके बांटना चाहते हैं, साधक दुनिया को समभाव में बांधना चाहते हैं। वेद साधारण ज्ञान की बात नहीं करता, वह तो विशेष ज्ञान का प्रकाश करता है, इंजीनियर बनें, डॉक्टर बनें, प्रोफेसर बनें, सबमें विशेषता हो, चारों तरफ जीवन-क्षेत्र में जागरूकता हो। तो, सामवेद का यह मंत्र हमें क्या संदेश दे रहा है, इस पर विचार करें। हम सबको समता की साधना करनी है, ताकि उस ज्ञान से मानवता की रक्षा की जा सके। आज इंसानियत-मानवता कराह रही है। परमेश्वर की अनुकम्पा से ऋषि दयानन्द का आगमन हुआ। उन्होंने संसार में तीन चीजों को सही रूप में प्रस्तुत किया- ज्ञान दिया। हम भटक चुके थे। पहला सही रूप ब्रह्मचर्य के बारे में दिया। लोग ब्रह्मचर्य को भूल चुके थे, मुगल शासन के प्रभाव से। वहां ब्रह्मचर्य का महत्व नहीं है। अंग्रेजी शासन में भी गड़बड़ी हुई। खोखलापन बढ़ा। और आज तो काले अंग्रेजों का राज्य भी देख ही रहे हैं, क्या कर दिया, राष्ट्र के चरित्र को।

तो, ऋषि दयानन्द ने सत्य-सनातन-वैदिक धर्म की रक्षा के लिए ब्रह्मचर्य के सही स्वरूप को बताया। दूसरी चीज; ऋषि ने यज्ञ के सही स्वरूप को जनता में रखा। लोग यज्ञ के नाम पर हिंसा करते थे। संसार में जब सत्योपदेष्टा नहीं होते, तो अन्धपरम्पराएं, अंधविश्वास चल पड़ते हैं। इसे सनातन नाम नहीं दे सकते। अश्व नाम राष्ट्र का है और मेध है यज्ञ- यज्ञ (संगठन)। तो अश्वमेध का अर्थ बना राष्ट्र को संगठित करना, न कि घोड़े को काट कर अग्नि में आहुति देना। इसी तरह गोमेध आदि। ऋषि दयानन्द ने तीसरी देन संसार को दी- वह है वेद का सही स्वरूप। लोग मनमर्जी का अर्थ कर रहे हैं। ऋषि ने योग-युक्त अर्थ दिया।

सामवेदी समतायुक्त होकर अपने महान लक्ष्य के लिए जागरूक हो आगे बढ़ता है। आप गृहस्थ हैं। सब कर्तव्य कर्म करना है, परन्तु मोह-जाल में फंसना नहीं है। संसार में अकेला रहना सबके वश का नहीं है। गृहस्थ को पुल समझो, पुल पार करना है। लोभ-मोह से ऊपर उठना है। तो, साम के उपासक भक्त को क्या करना है-

त्वया वयं पवमानेन सोम भरे कृतं विचिनियाम शश्वत्।

(शश्वत्) सनातन तत्व को, सत्य को (विचिनियाम) चुनते हैं, विशेष प्रकार से। चयन करते हैं विशेषतया सत्य का। इस सृष्टि में क्या है? कहाँ-कहाँ से? क्यों गतिविधियाँ चल रही हैं? शृंखला का तारतम्य क्या है? कहां से प्रभावित हो रही है? साधक, वैज्ञानिक, उपासक इन तत्वों को ढूंढते-खोजते हुए समता को प्राप्त हो जाता है। अन्तर्मुखता को प्राप्त होकर, आन्तरिक शक्तियों को प्राप्त कर, संसार के कल्याण के लिए सत्यवाणी रूपी धन-खजाना लुटाता है। इस मंदिर में भगवान जो बैठा है। फिर वहां खजाना (आत्मिक) ठाठें मारता है। इसीलिए वेद ने कहा है- विष्णोः शर्मासि! तू विष्णु का घर है- निवास है।

नाहक क्यों होता हैरान।
मिले मन-मन्दिर में भगवान्।

जिस मन्दिर में भगवान बैठा है, उसमें शराब, सिगरेट की गन्दगी नहीं फेंकनी चाहिए। लोग इस तरह विचार करें, तो सारी बुराई छूट जाए। अपने मन्दिर को तो सजाया नहीं, संवारा नहीं; बाहर के मन्दिर से क्या बनेगा। माना मन्दिर जा रहे हैं जी। तीर्थ जा रहे हैं परन्तु अपने आत्म मन्दिर में जाने का संकल्प नहीं लिया। प्रभु की सृष्टि सब जगह देखो। (भरे कृतम्) सनातन तत्त्व कर्म में प्रवाहित हो जाता है, आचारवान् बन जाता है, साधक।

हममें से ही ऋषि बनेंगे, महापुरुष बनेंगे, सुधारक बनेंगे।

आप गृहस्थी में भी रहते हुए, अपने कर्म को आचरण में ढाल लीजिए, मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होगा। इस गृहस्थ में फंसना नहीं है, आगे ही आगे बढ़ना है। बोलिए- हम सब गृहस्थ में पुल समझ करके पार करने आये हैं, फंसने के लिए नहीं। पुल पार करने के लिए है। इस पर खड़ा नहीं रहना है, आगे बढ़िए। लोग कह जाते हैं- 'आप तो संन्यासी हैं। आप मौज में हैं।' मैं इस प्रकार के सोचने वालों से इतना ही निवेदन करूंगा कि मेरे साथ रहकर देखें कि कितना संघर्ष है।

तो, साधना क्या करनी है? **त्वया वयं पवमानेन सोम।**

प्रभो! आपके द्वारा पवित्रता का- सौम्यता का संकल्प लेते हैं। तो हमें पवित्र बनना है। एक स्थान पर एक बेटी ने चित्रहार, अश्लील पिक्चर छोड़ने का संकल्प लिया। इन दृश्यों से तो चरित्रहीनता बढ़ती है। बोलो, कोई युवक-युवती इस सत्संग में छोड़ने को तैयार है? एक युवक संकल्प ले रहा है कि ऐसे दृश्य नहीं देखूंगा। राजा बेटा बनो। इन अश्लील दृश्यों को देखते रहने से आवरण पर आवरण, मैल-अपवित्रता बढ़ती जाती है। उत्तेजना भड़कती है। छोटी बातों पर क्रोध-असहिष्णुता ही फैलती जाती है। आत्मारूपी हीरे को दबाते रहते हैं, और जीवन जड़ जगत् में खूब भागता रहता है। तो भाई! हरकतें छोड़ दो। आत्मबोध प्राप्त करो। जैसे आत्म-साधना बुढ़ापे की चीज नहीं है, सब कुछ जवानी में ही होता है। बुढ़ापा तो प्राप्त अनुभव को बांटने का समय है। बुढ़ापे में कुछ हो जाए, तो हो जाए, अन्यथा सब शिथिल। एक चीज मंत्र में बहुत अच्छी कही गयी है। सोम-सुन्दर बनो, प्यारे बनो। सबको प्यार बांटो। प्रभु से ही प्यार मिलता है। प्रभु से बातें किया करो, ध्यान में बैठकर। दुनिया से, सम्बन्धियों से अपने दुख मत कहो, प्यारे प्रभु से सब कुछ कह डालो। प्यार तो माँ भी बच्चों को करती है, पर वह भी सीमित। तत् नः मित्रः वरुणः - वह मित्र, अदिति (वर्जनहार शोधक) तथा अदिति (अखण्ड रश्मियां) हमारी शक्तियां बढ़ाएं। वह मित्र नहीं, शत्रु है, जो शक्ति का दुरुपयोग करता है। शक्ति बढ़ेगी, प्रसन्न रहो। मुस्कान सदा बनी रहे, समय-समय पर हँसना सीखो। मंत्र का भावार्थ उच्चारित कीजिए। बोलिए, हम सब उस पवित्र सोम की परमेश्वर की कृपा से सनातन सत्य कर्मों को चुनते हुए, करते हुए, उसकी मित्रता में, अनुशासन में, अपने शरीर को, जीवन-मस्तिष्क को सदा पवित्र रखें, जिससे सदा संसार में समता पवित्रता बांट सकें।

(वेद प्रवचन से साभार)

ब्रह्म तथा देवयज्ञ और आर्य पर्वों पर केन्द्रित
एक श्रेष्ठ पुस्तक
आर्य पर्व पद्धति
(केवल 15/- में)
आर्यावर्त प्रकाशन,
अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)
सम्पर्क- 9412139333

ऋग्वेद

।। ओ३म् ।।

यजुर्वेद

'सत्यार्थ प्रकाश'

के प्रकाशन हेतु आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की अनूठी एवं क्रांतिकारी योजना

● पहली बार सत्यार्थ प्रकाश की लगातार 1,00,000 प्रतियाँ छापने का दृढ़ संकल्प

विशेष : प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' व आर्यावर्त केसरी प्रकाशित किये जाएंगे। घोषित धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं हैं। ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी घोषित धनराशि भेजी जा सकती हैं। धन्यवाद

।। योजना में सम्मिलित होने की शर्तें ।।

- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के इस महायज्ञ में आप भी अपनी आस्थाओं की पावन आहुतियाँ भेंट कर सकते हैं।
- न्यूनतम रु0 3100/- की राशि भेंट करने वाले आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश के अंत में 1000 प्रतियों में प्रकाशित होंगे तथा उन आर्यसमाजों को सत्यार्थ प्रकाश की 31 प्रतियां इस सात्विक राशि के उपलक्ष्य में भेंट की जाएंगी।
- सभी महानुभाओं को उनके द्वारा भेंट की गयी धनराशि के बराबर मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क भेंट किए जाएंगे, अर्थात् यदि आपने रुपये 1,00,000/- (एक लाख रु0) भेंट किये हैं, तो आपको सत्यार्थ प्रकाश की 1000 प्रतियां, अथवा रु. 51,000/- (इक्यावन हजार रुपये) भेंट किये हैं, तो 510 प्रतियाँ निःशुल्क भेंट की जाएंगी अथवा रु. 5100/-, 3100/-, 2100/-, 1100/- की राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की क्रमशः 51, 31, 21, 11 प्रतियां भेंट की जाएंगी। इस प्रकार आप जितनी धनराशि प्रदान करेंगे, उतने ही मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश आपको भेंट किए जाएंगे।

: प्रकाशन की विशेषताएं :

1. पुस्तक का आकार 20 X 30 का 8 वां भाग
2. कागज की क्वालिटी 80 GSM कम्पनी पैक
3. सजिल्द, उत्तम व आकर्षक कलेवर
4. फोन्ट साइज 16 प्वाइंट
5. 'सत्यार्थप्रकाश के अंत में इस ग्रन्थ व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जुड़ी ऐतिहासिक विरासतों के रंगीन चित्र भी प्रकाशित होंगे।
6. 'सत्यार्थप्रकाश' की पृष्ठ संख्या लगभग पांच सौ है तथा इसका मूल्य 150/- प्रति ग्रन्थ है।

पता- डॉ. अशोक कुमार आर्य 'सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि', आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221
Ph. : 05922-262033, 09412139333, E-mail : aryawartkesari@gmail.com

सामवेद

अथर्ववेद

सत्यार्थ प्रकाश
का एक और नवीन संस्करण प्रकाशित
साइज़ - 18 x 23 x 8
मूल्य- अजिल्द- 60
सजिल्द- 70
दानदाताओं तथा सहयोगी महानुभावों के चित्र प्रकाशन की सुविधा। जन-जन तक पहुंचाएं ऋषिवर
दयानन्द का यह क्रान्तिकारी ग्रन्थ

अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश- कब और क्यों?

पं० उम्मेद सिंह विशारद

ऋतस्यपथि वेधा अपायि- ऋ0- सत्य के पथ की रक्षा ईश्वर करता है।

ऋषि दयानन्द का जन्म 1824 ई0 में हुआ था। वे 1860 में गुरु विरजानन्द जी के पास विद्याध्ययन करने के लिए पहुंचे। उस समय उनकी आयु 36 वर्ष की थी। 1963 में उन्होंने गुरु से दीक्षा ली और अध्ययन समाप्त करके जीवनक्षेत्र में उतर पड़े। इस समय वे 39-40 वर्ष के हो चुके थे। विरजानन्द के पास उन्होंने जो सीखा, वही उनकी वास्तविक शिक्षा थी। क्योंकि इससे पहले जो कुछ पढ़ आये थे, उसे विरजानन्द जी ने भुला देने की उनसे प्रतिज्ञा ली थी। इस प्रकार ऋषि दयानन्द जी की यथार्थ शिक्षा 1860 से 1863 तक कुल तीन वर्ष की थी। उन्होंने आगे चलकर अपने जीवन में जितने व्याख्यान दिये, जितने ग्रन्थ लिखे, जितने शास्त्रार्थ किये, वह इन तीन साल के अध्ययन का परिणाम था। इसी से स्पष्ट होता है कि इन तीन सालों में उन्होंने जो पाया था, वह कितना मूल्यवान था।

तीन वर्षो का चमत्कार :

अपने गुरु विरजानन्द जी से ऋषि दयानन्द जी ने जो गुर पाया था, वह आर्ष तथा अनार्ष ग्रन्थों में भेद करना था। 36 वर्ष की आयु से पहले उन्होंने जो कुछ पढ़ा था, वह अनार्ष ग्रन्थों का अध्ययन था। आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन का उनका कुल समय तीन वर्षों का था। इन तीन वर्षों के अध्ययन ने उनके जीवन, उनकी विचारधारा में जो क्रान्ति उत्पन्न कर दी, उससे भारत के पिछले सौ वर्षों का इतिहास बन गया।

धार्मिक, सामाजिक व राष्ट्रीय चेतना का मूल स्रोत सत्यार्थ प्रकाश :

अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश 1874 में लिखा गया। मुरादाबाद के राजा जयकृष्णदास जब काशी में डिप्टी कलेक्टर थे, तब ऋषि दयानन्द काशी पधारे थे। राजा जयकृष्णदास ने ऋषि से कहा- आपके उपदेशामृत से वे ही व्यक्ति लाभ उठा सकते हैं, जो आपके व्याख्यान सुनते हैं। जिन्हें आपके व्याख्यान सुनने का अवसर नहीं मिलता, उनके लिए अगर आप अपने विचारों को ग्रन्थ रूप में लिख दें, तो जनता का बड़ा उपकार हो। ग्रन्थ के छपने का भार राजा ने अपने ऊपर ले लिया। यह आश्चर्य की बात है कि यह बृहत्काय तथा महत्वपूर्ण ग्रन्थ, जिसे पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी ने 14 बार पढ़कर कहा कि हर बार में उन्हें नया रत्न हाथ आता है, कुल साढ़े तीन महीनों में लिखा गया। जिन्होंने सत्यार्थ प्रकाश का गहराई से अध्ययन किया, उन्होंने पाया कि इसमें 377 ग्रन्थों का हवाला है। इस ग्रन्थ में 1542 वेदमंत्रों या श्लोकों का उदाहरण दिया गया है। चारों वेद, सब पुराण, ग्रन्थ, सब उपनिषद, छहों दर्शन, अठारह स्मृति, सूर्य पूराण, सूर्य ग्रन्थ, जैन-बौद्ध ग्रन्थ, बाइबिल, कुरान- सबका उदाहरण ही नहीं, उनका रिफरेंस भी दिया है। किस ग्रन्थ में कौन-सा मंत्र या श्लोक वाक्य कहां है, उनकी संख्या क्या है- वह सब-कुछ इस साढ़े तीन महीनों में लिखे ग्रन्थ में मिलता है, जिसने नवीन सामाजिक दृष्टिकोण को जन्म दिया।

सत्यार्थ प्रकाश चुने हुए क्रान्तिकारी विचारों का खजाना है :

ऐसे विचार, जिन्हें युग में कोई सोच भी नहीं सकता था। समाज की रचना जन्म के आधार पर न होकर कर्म के आधार पर होनी चाहिए। यह एक विचार इतना क्रान्तिकारी है कि इसकी क्रिया से हमारी 90 प्रतिशत समस्यायें हल हो जाती हैं। शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का विचार सत्यार्थ प्रकाश की देन है। लोकमान्य तिलक ने कहा था कि स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। दादाभाई नौरोजी ने स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया था। किंतु इनसे पहले ऋषि दयानन्द ने जो सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास में लिखा था कि कोई कितना भी कहे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है।

वर्तमान में हम जिन समस्याओं को लेकर उलझे रहते हैं, उन सबका निदान सत्यार्थ प्रकाश में मिलता है। जैसे हरिजनों की समस्या, स्त्रियों की समस्या, गरीबी की समस्या, देश-भाषा की समस्या, चुनाव की समस्या, निमय तथा व्यवस्था की समस्या, गोरक्षा की समस्या, नसबन्दी की समस्या, आचार की समस्या, नवयुवकों की समस्या- इन सब समस्याओं का हल सत्यार्थप्रकाश में पहले से ही है।,

वेदों की समस्या :

हिन्दू समाज की सबसे बड़ी समस्या वेदों की थी। हर कोई वेदों के नाम लेकर कहता था- स्त्रियों और शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं है, क्योंकि वेदों में लिखा है- ''स्त्री शूद्रो ना धीयताम।'' बालविवाह क्यों होना चाहिए,?क्योंकि वेदों में लिखा है। जन्म से वर्ण व्यवस्था क्यों मानें? क्योंकि वेदों में लिखा है।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत: ब्राह्मण परमात्मा के मुख से, और शूद्र उसके पांव से उत्पन्न हुए हैं। जब ऋषि दयानन्द ने यह देखा कि वेदों का नाम लेकर हर संस्कृत वाक्य को वेद कहा जा रहा है, और वेदों का उदाहरण देकर वेदमंत्रों का अनर्थ किया जा रहा है, तो उन्होंने निश्चय किया कि वेदों को केन्द्र बनाकर हिन्दू समाज की रक्षा की जा सकती है।

वेदों के संबन्ध में ऋषि दयानन्द की दूसरी खोज यह थी कि वेदों के शब्द रूढ़ि नहीं, यौगिक हैं। वेदों के उस समय के सभी विद्वानों, भाष्यकारों ने वैदिक शब्दों के रूढ़ि अर्थ ही किये थे। सायण, उन्वट, महीधर, मैक्समूलर, राथ, विल्सन, ग्रासमैन ने एक-दूसरे की देखा-देखी अर्थ किये थे। किंतु ऋषि दयानन्द जी ने इस विचारधारा को भी ठोकर मार दी, और वेदों के यौगिक अर्थ करके वेदों के प्रति संसार को नया मार्ग दिखाया। ऋषि दयानन्द जी ने हिन्दुओं को हिन्दू रहते हुए उन्हें नवीन विचारधाराओं में रंग दिया। कोई वृक्ष जड़ के बिना खड़ा नहीं रह सकता। कोई समाज अपने मूल के बिना नहीं जी सकता। ऋषि दयानन्द जी ने इसी गुर को पकड़ा। उन्होंने कहा कि पीछे वेदों की तरफ देखो, उसमें जमकर आगे भविष्य की तरफ पग बढ़ाओ। भूत को छोड़ देंगे तो वृक्ष की जड़ कट जाएगी। भविष्य को नहीं देखेंगे, तो उठ नहीं सकोगे। यह ऋषि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश का संदेश है। यही ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य का संदेश है। (नोट : कुछ अंश वैदिक संस्कृति का संदेश से लिये गये हैं)

सत्यार्थप्रकाश का मुख्य उद्देश्य आर्य समाज का विकास है।

एक चिन्तन योजना :

भारत की वर्तमान जनसंख्या के हिसाब से आर्य समाज का विकास संतोषजनक नहीं है, यह एक महत्वपूर्ण चिन्ता का विषय है। अगर हम चुप बैठे रहे, तो आने वाले समय में अधिकांश आर्य समाजों में ताले लग सकते हैं। हमें जागना ही पड़ेगा।

आज का युवा वर्ग इस वैज्ञानिक युग में क्या चाहता है?

आज के अधिकांश युवा समाज में प्रचलित धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक मान्यताओं से ऊब चुके हैं। वे कुछ नया चाहते हैं। और उनके लिए नया केवल वैदिक विचारधारा ही है, क्योंकि वैदिक धर्म विज्ञान व सृष्टिक्रमानुसार है। आज आर्यसमाज को युग के साथ चलकर वैदिक मान्यताओं का प्रचार प्रत्येक रूप से करना होगा। जैसे-

1. सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारह समुल्लासों को अलग-अलग छपाकर मोटे ट्रैक्ट के रूप में वितरण किया जाए। छोटे ट्रैक्ट लोग जल्दी पढ़ते हैं।

2. भारत सरकार से मांग करें कि भारत की शिक्षा-पद्धति में एक विषय वेदों की आर्ष मान्यताओं का पाठ का अनिवार्य किया जाए।

3. यज्ञ पद्धति पंचमहायज्ञ की लाखों प्रतियां छपाकर नि:शुल्क बांटी जाएं

4. आर्य समाज की प्रमुख मान्यताएं या सोलह संस्कारों के ट्रैक्ट छापे जाएं। शराब पीने व धूम्रपान से हानियों की लघु पुस्तिका वितरित की जाए।

5. आर्य समाज का स्वतंत्रता आन्दोलन में योगदान तथा धर्म की वास्तविक परिभाषा क्या है- छोटी-छोटी पुस्तकें छपवाकर आन्दोलन के रूप में वितरित की जाएं।

6. आर्य समाज ने समाज सुधार, महिलाओं का सुधार, अन्धविश्वास समाप्त करने व अनेक सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने का क्या कार्य किया- इसकी जानकारी पुस्तकों द्वारा दी जाए।

7. आर्ष और अनार्ष विद्या में आर्ष साहित्य या ज्ञान को छोटी-छोटी पुस्तिकों रूप में छापकर वितरण करना चाहिए।

नोट- उक्त छोटे-छोटे ट्रैक्टों को छपवाकर लाखों की संख्या में नि:शुल्क सार्वजनिक वितरण किया जाए, तो लोग चाहे थोड़ा ही पढ़ें, पर जिज्ञासा से पढ़ेंगे। प्रत्येक ट्रैक्ट के ऊपर लिखा जाए- 'हिन्दू धर्म का रक्षक आर्य समाज है।' 'वेदों की ओर लौटें।'

-गढ़ निवास, मोहकमपुर
देहरादून (उ०ख०)
मोबा० : ९४११५१२०१९, ९५५७६४४१८००

जहां नहीं होता कभी विश्राम
ओ३म्
आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 40वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

आर्य नेता, शिक्षाविद् डा. अशोक कुमार चौहान जी
स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी धर्म मुनि जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी
के सानिध्य एवं युवा वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व में

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ
एवम्
अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन
दिनांक : 1, 2, 3 फरवरी 2019 (शुक्र, शनि व रविवार)
स्थान: पंजाबी बाग स्टेडियम, रिंग रोड, नई दिल्ली-110026

विराट् शोभा यात्रा: शुक्रवार 1 फरवरी 2019, प्रात: 10:30 बजे
पंजाबी बाग व पंजाबी बाग विस्तार के विभिन्न क्षेत्रों में शोभा यात्रा निकाली जायेगी।

मुख्य आकर्षण
* राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन
* वेद रक्षा सम्मेलन
* शिक्षा-संस्कृति बचाओ सम्मेलन
* भव्य संगीत संध्या
* राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन
* राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
प्रात: से रात्रि निरन्तर तीनों दिन ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था रहेगी

1. दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य बन्धु अपने पधारने की संख्या के बारे में 15 जनवरी 2019 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन व आवास आदि का उचित प्रबन्ध किया जा सके। सम्पर्क: श्री दुर्गेश आर्य-9868664800, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री-9810884124
2. कृपया यजमान बनने के इच्छुक आर्य बन्धु व आर्य समाजें अपना यज्ञकुण्ड 15 जनवरी 2019 तक गोपाल जैन-9810756571, प्रदीप गोगिया-8800550785, विनोद कालरा-9899444347, संतोष शास्त्री-9868757140, देवमित्र आर्य-9313199062 पर आरक्षित करवा लें।

हज़ारों की संख्या में पहुँचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

अपील
इस रचनात्मक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है कृपया दानराशी क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली'' के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवायें। ऋषि-लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, शुद्ध घी, रिफाईन्ड, सब्जी आदि खाद्य सामग्री देकर पुण्य के भागी बनें

निवेदक:
अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष, 9810117464
महेन्द्र भाई, राष्ट्रीय महामन्त्री, 9013137070
धर्मपाल आर्य, कोषाध्यक्ष, 9871581398
सुभाष आर्य, रवि चड्डा, सत्यानन्द आर्य, स्वागताध्यक्ष, 9810667581, 9818343460, 9313923155

आशीर्वाद: आनन्द चौहान, दर्शन अग्निहोत्री, ठाकुर विक्रम सिंह, डा. रिखबचन्द जैन, आर.पी. सूरी, राजेन्द्र लाम्बा, अमरनाथ बत्रा, नरेन्द्र आर्य सुमन, चन्द्रमोहन खन्ना, ओमप्रकाश जसुजा, कस्तूरीलाल मक्कड़, सुरेन्द्र मानकटाला, प्रकाशचन्द आर्य, सुशील गुलाटी, पी.के. सचदेवा, ओम सपरा

यशोवीर आर्य, रामकुमार सिंह, सुभाष बब्बर, भानुप्रताप वेदालंकार — राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
देवेन्द्र भगत, राकेश भटनागर, सुशील आर्य — राष्ट्रीय मंत्री
आनन्दप्रकाश आर्य, विश्वनाथ आर्य, स्वतंत्र कुकरेजा, रामकृष्ण शास्त्री — राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
प्रवीण आर्य, सुरेश आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य — राष्ट्रीय मंत्री
सौरभ गुप्ता, अरुण आर्य — व्यवस्थापक

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007, मो. 7550568450
E-mail: aryayouth@gmail.com Website: www.aryayuvakparishad.com
Group: aryayouthgroup@yahoogroups.com • join-http:// www.facebook.com/group/aryayouth

धन्य धन्य हे दयानन्द

अश्विनी कुमार पाठक आर्य

धन्य धन्य हे महर्षि दयानन्द, तूने हमें बचा लिया।
सो-सो के लुट रहे थे हम, तूने हमें जगा दिया।।
अज्ञानियों को ज्ञान की आंखें मिल गयीं, मुर्दा रगों में जान आई,
जादू सा क्या चला दिया, अमृत सा क्या पिला दिया।
तूने ही लाला लाजपत को शेरे बबर बना दिया।
श्रद्धा से स्वामी दयानन्द ने सीने पर खाईं गोलियां।
लेखराम अपने खून से तेरी कहानी लिख गया।
हँस हँस के हंसराज ने तन, मन और धन लुटा दिया।
भगतसिंह और रामप्रसाद बिस्मिल कितने शहीद हो गये।
देशभक्ति का पाठ सब आर्यों को पढ़ा दिया।
स्वतंत्रता आन्दोलन में महात्मा गांधी से हजारों आर्य जुड़ गये।
तेरे दिवाने जब दक्षिण दिशा को चल दिये।
लोग हैरान रहे गये निजाम का दिल दहला दिया।
चौबीस आर्यवीर जेलों में शहीद भी हो गये।
निजाम ने प्रभावित होकर वेदप्रचार से प्रतिबन्ध हटा लिया।
धन्य है तुझको हे ऋषि तूने हमें जगा दिया।।
आर्यों ने विजय पताका लहराई वैदिक धर्म बचा लिया।

परन्तु अब वैदिक धर्म की स्थापन होनी चाहिए। महर्षि दयानन्द के आदेशानुसार जनगणना में अपना धर्म सबको वैदिक ही लिखना चाहिए। जनगणना तो दस वर्ष बाद होती है, इसलिए सब लोग अन्य सब जगह अपना यही धर्म लिखवा दें। सप्रेम कोर्ट के निर्णयानुसार हिन्दू कोई धर्म नहीं। यह तो एक जीवनशैली है। अपने नाम के साथ आर्य लिखा करें।

हमारा आर्यसमाज द्वारा प्रस्तुत अभिवादन, जो अमरीका में स्वीकार किया गया 'नमस्ते'

नमः और ते की सन्धि से सुन्दर बन जाये 'नमस्ते'
सप्रेम हार्दिक यूं आपके लिए दर्शाये नमस्ते।
श्रद्धा से दोनों हाथ जोड़ जब किया जाता नमस्ते उच्चारण।
अत्यंत शोभनीय लगता यह प्रचीनतम संस्कृतिद्योतक उच्चारण।।
देनों हाथ जोड़कर जब हृदय के समीप लाये जाते।
और श्रद्धा से थोड़ा शीश झुका वाणी उच्चारे नमस्ते।
इस नम्र अभिवादन से होता स्वाभाविक प्रेम उत्साह प्रवाह।
और नमस्ते अभिवादन द्वारा परस्पर होती प्रसन्नता अथाह।।
हृदय समीप दोनों हाथ माने जाते हैं शक्ति प्रतीक।
भुजाएं दोनों शारीरिक बल द्योतक भरती हैं रक्षाभाव असीम।।
मानसिक शक्ति द्योतक मस्तिष्क पूर्ण आदर को यहां दर्शायें
गुड मार्निंग, ईविनिंग अथवा नाइट तो केवल समयबोध कराते।
हाथ मिलाना, गले मिलना अथवा चुंबन छूतरोग का भय दिखाते।।
दूर से हाइ बाइ तो निरादर एवं तिरस्कार समान संकेत कहाते।
इन सभी दोषों से मुक्त हर समय उपयुक्त अभिवादन है केवल नमस्ते।।
छोड़ो यह हाइ बाइ मिलना गले चुंबन अथवा हाथ मिलाना।
अपनाओ सर्वोत्तम जो चला आ रहा सनातन अभिवादन पुराना।।
आदर सत्कार श्रद्धा प्रेम सभी सार्थक होते, जब नमस्ते से हो अभिवादन।
केवल नमस्ते अभिवादन में ही समावेश सभी गुणों के हैं दर्शन।।
माता पिता पति पत्नी छोटे बड़े अथवा हों बहन भाई।
सेवक स्वामी धनी निर्धन मित्र अथवा सखा रहाई।।
सभी देश विदेश जाति धर्म के लोग मिलें अथवा करें पत्राचार।
नमस्ते से किया अभिवादन सबके लिए सदा फिट बैठे सभी प्रकार।।

लेखक- धर्मवीर गुलाटी, मुंबई
प्रस्ततुकर्ता- अश्विनी कुमार पाठक
१०७- डी ब्लॉक, वसुन्धरा ऐन्क्लेव,
सैक्टर ६, द्वारका, नई दिल्ली

सूचना

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2018 के चित्रों को देखने और डाउनलोड करने के लिए इंटरनेट के माध्यम से https://www.facebook.com/AjayTankarawala/ पर जाएं और लाइक व शेयर अवश्य करें।
-अजय सहगल (टंकारा वाले)

पाखण्ड में गोता खाते

पंडित संजय सत्यार्थी

ऋषि न आते टंकारे में हम गूंगे रह जाते।
ज्ञान वेद का न पाते पाखण्ड में गोता खाते।।
कृण्वन्तो विश्वमार्यम् संदेश सुनाने वाला कौन।
स्वस्तिपंथा मनुचरेम की राह दिखाने वाला कौन।
अपने देश में अपना राजा बिगुल बजाने वाला कौन।
एक ईश और एक नाम का स्वर गुंजाने वाला कौन।
शिवरात्रि की रात चीरकर जो ऋषिवर न आते।।
ज्ञान वेद ....
पराधीन में सोया स्वाभिमान जगाने वाला कौन।
बंजर भूमि में वैदिक हरियाली लाने वाला कौन।
संस्कृत–संस्कृति का फिर से संगीत सजाने वाला कौन।
अंग्रजों की कुटिल कामना को ठुकराने वाला कौन।
तजकर सारे ज्ञान रश्मियाँ पश्चिम को अपनाते।।
ज्ञान वेद ....
काशी की छाती पर चढ़कर सेंध लगाने वाला कौन।
हरिद्वार पाखण्ड खण्डिनी ध्वज फहराने वाला कौन।
सुप्त लुप्त यह आर्य जाति में प्राण फूंकने वाला कौन।
करके भीष्म अविद्या सारी बनी वेद की ज्वाला कौन।
ललक हमारी जग न पाती कर मलते रह जाते।।
ज्ञान वेद ....
डोली अर्थी में बदली थी उसे सजाकर लाता कौन।
शिक्षा के पावन अर्थों से सत्य सुधा बरसाता कौन।
अछूत दलित बिछड़े भाई को फिर से गले लगाता कौन।
मिली पुरन्दर की गद्दी थी पल भर में ठुकराता कौन।
आर्य समाज जन–जन उपकारी अगर न बाग लगाते।।
ज्ञान वेद ....
ऋषियों की पावन परम्परा की रक्षा करने वाला कौन।
वेद सत्य विद्या है इसकी शिक्षा देने वाला कौन।
चेतन के पूजन अर्चन की दीक्षा देने वाला कौन।
चले वेद पथ पर दुनिया यह इच्छा रखने वाला कौन।
वसुधैव कुटुम्बकम का सपना कैसे सच्चा कर पाते।।
ज्ञान वेद ....
गुरुडम अंधविश्वास जगत का कहो कभी मिट पाता क्या।
मुंडे–मुंडे मतिर्भिन्ना में एक लक्ष्य सध पाता क्या।
जगतगुरू है आर्यावर्त यह विचार उठ पाता क्या।
हम हैं आर्यों के वंशज यह भाव भला जग पाता क्या।
विधर्मियों के फतवा बपतिस्वा से 'संजय' कैसे बच पाते।।
ज्ञान वेद ....

आर्योपदेशक, पटना, बिहार
मो. 9006166168, 7717766151

आर्य समाज में आइए

ओमप्रकाश आर्य

आर्य समाज में आइए, जीवन धन्य बनाइए।
सत्य ज्ञान को पाइए, मुक्तिपथ पर जाइए।।
यहां ढोंग पाखण्ड नहीं है, तंत्र मंत्र गलगंड नहीं है,
अन्धकार का नाम नहीं है, बिना तर्क के काम नहीं है;
त्रैतवाद को जानिए, वेदसत्य को मानिए।
तन मन दोनों स्वस्थ रहेंगे, सच्चा ईश्वरभक्त बनेंगे,
भ्रम की गलियां नहीं मिलेंगी, दुष्प्रवित्तियां नहीं खिलेंगी;
ऋषियों के गुण गाइए, आर्यावर्त पहचानिए।।
वैदिक संध्या–यज्ञ कीजिए, तीन ऋणों से मुक्ति लीजिए,
संस्कार सर्वोच्च व्यवस्था, शुद्ध सात्विक यही संस्था;
जाति–पाति मिटाइए, मानवता को खिलाइए।।
वैदिक ज्ञान का सूर्य मिलेगा, हृदय का उद्यान लिखेगा,
तम के बादल छंट जाएंगे, औरों से भी कराइए।।
सत्य स्वरूप ईश्वर का जानें, ज्ञानपूर्वक सब को माने,
राम–कृष्ण का सच्चरित्र था, उनका जीवन पूर्ण पवित्र था;
चरित्र ऊँचा उठाइए, दुर्गुण सारे भागाइए।।
जो आर्य समाज में आएगा, वही श्रेष्ठ बन जाएगा,
आर्य वही कहलाएगा, जो उच्चादर्श अपनाएगा;
भावना ऐसी जगाइए, आर्य समाज में आइए।।
-आर्य समाज, रावतभाटा, वाया- कोटा (राज०)

वर्ष लाये हर्ष और किलकारियां

डॉ० रामबहादुर 'व्यथित'

तितलियों के पंख पर लिखी इबारत,
भोर की किरणें उतारें आरती।
सांझ की दुल्हन सजाये चांदना,
रातरानी नेह तुम पर वारती।।
इन्द्रधनुषी किरन से झांके उषा,
नेह के सरसिज सजाये पालकी।
मलय की गंध से महके यह धरा,
व्योम में लिख दो ग़ज़ल सम्मान की।।
यश–पताका व्योम में फहरे सदा,
थाती बनो राष्ट्र के सम्मान की।
वर्ष लाये हर्ष औ' किलकारियां,
गूंजे वंशी मधुर घनश्याम की।।
-विजय वाटिका, कोठी नं०-३,
सिविल लाइन्स, बदायूं

आर्यावर्त केसरी प्रकाशन समूह

विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवा के लिए प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित हैं

विश्व भर में वेद के प्रचार-प्रसार व महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों को घर-घर पहुंचाने को संकल्पित आर्यावर्त केसरी विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवा के लिए देश-विदेश से प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित करता है। आवेदन संक्षिप्त जीवनवृत्त के साथ दिनांक 28 फरवरी 2019 तक पहुंच जाने चाहिए। (आवेदन हिन्दी भाषा में ही स्वीकार किये जाएंगे)। पुरस्कार इस प्रकार हैं-

* **अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वैदिक हिन्दी भाषा व भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में अमूल्य योगदान प्रदान करने पर- अन्तर्राष्ट्रीय आर्यरत्न पुरस्कार।**
* **राष्ट्रीय स्तर पर वेद के प्रचार-प्रसार, समाज-सेवा के लिए- राष्ट्रीय आर्यावर्त भूषण पुरस्कार।**
* **नि:शक्त, गरीब, अनाथ, व गुरुकुलों की उत्कृष्ट सेवा व दानशीलता के लिए- आर्यावर्त सौम्या दानवीरश्री पुरस्कार।**
* **वैदिक साहित्य के विद्वान लेखक, कवि व पत्रकार के लिए- आर्यावर्त कलमश्री पुरस्कार।**
* **युवा लेखक, कवि, गायक, पत्रकार, समाजसेवी के लिए- आर्यावर्त युवा गौरव पुरस्कार।**

आवेदन भेजने का पता : सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)-244221
☎ फोन : 05922-262033, 09412139333
ई-मेल : aryawartkesari@gmail.com

कर्मफल-रहस्य

चन्द्रपाल सिंह सिरोही

सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। (महर्षि दयानन्द सरस्वती)

सतमूले तद्वपा को जात्यायुर्भोका। (योग दर्शन साधनपाद–13)

मूल के रहते हुए उनका फल 1– जाति (यानि), 2– आयु, और 3– भोग होते हैं।

उपरोक्त सूत्र के विद्वानों ने अलग–अलग अर्थ किये हैं। 1– कुछ आयु को निश्चित मानते हैं। 2– कुछ आयु का घटना–बढ़ना मानते हैं। 3– कुछ आयु को श्वासों पर आधारित मानते हैं। इनमें सभी सच्चे नहीं हो सकते। हम कहीं पर गलती कर रहे हैं। 'सत्य क्या है'– यह जानना आवश्यक है।

महर्षि पतंजलि ने जिस समय योगशास्त्र लिखा, उस समय बाल की खाल निकालने वाले अनेक ऋषि–महर्षि थे। अनेक वाद–विवाद के उपरांत योगशास्त्र को दर्शन की कोटि में माना गया होगा। मगर हम अपनी अल्प बुद्धि से मनमाने अर्थ कर रहे हैं।

मैं 1980 से इस विषय पर अध्ययन कर रहा हूं। कालाकाल, मृत्यु आदि विषयों से सम्बन्धित दर्जनों पुस्तकें मेरे पास हैं। विभिन्न पत्रिकाओं में छपे विद्वानों के लेख भी पढ़े हैं। आदरणीय आचार्य राजवीर सिंह शास्त्री जी ने इस विषय पर अथक प्रयत्न किया है। वह बधाई के पात्र हैं। ज्यों–ज्यों अध्ययन करता गया, जिज्ञासा बढ़ती गयी। लगभग 40 वर्ष के पठन–पाठन व अनुभव से मैंने जो निष्कर्ष निकाला है, विद्वानों की विचारगोष्ठी में रख रहा हूं। विद्वान मनीषी अपने विचारों से अवगत करायेंगे, ऐसी आशा है।

(नोट– इस विषय पर मैंने 'कर्मफल–रहस्य' नाम से एक अन्य वृहद् पुस्तक लिखी है, जो प्रकाशन हेतु लगभग तैयार है। मगर पुस्तक–प्रकाशन से पहले मैं विद्वानों की ज्ञानाग्नि से गुजरना चाहता हूं, इसीलिए उक्त मूल पुस्तक का लघु रूप इस लघु पुस्तिका के रूप में विद्वत्गण के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूं।) स्वमंतव्य लिखने से पहले उपरोक्त सूत्र पर विद्वानों के विचारों पर संक्षिप्त रूप से विचार करते हैं।

सतमूले तब्दपाको...... सूत्र से पहले क्लेश मूलः कर्माशयो... (योगदर्शन साधन पाद–12) सूत्र है। जिसका अर्थ है– क्लेश का मूल दृष्ट–अदृष्ट जन्मों के कर्मों की वासनाएं हैं, जो चित्त में कर्म की रेखा के रूप में संचित रहती हैं। इसको कर्माशय कहते हैं। परमपिता परमात्मा उन्हीं वासनाओं के फल भोगने के लिए कहता है– जात्यायुर्भोगा....... ।

1. जाति (योनि)– मनुष्य, पशु, पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि, 2. आयु– भोग भोगने को समय (काल), 3. भोग– जन्म–जन्मांतरों में किये अच्छे–बुरे कर्मों के फल (भोग), जिनको जीव विभिन्न योनियों में सुख–दुख रूप में भोगेगा।

जाति और भोग पर विद्वानों में मतभेद नहीं है। आयु (समय) पर मतभेद है। इस पर विचार करते हैं–

समय– समय दो प्रकार का होता है। एक वह, जो जगत की उत्पत्ति, स्थिति और नाश का कारण होने से अनंत है। दूसरा वह, जो ज्ञानगम्य है, अर्थात् गणित के द्वारा जानने योग्य। ज्ञानगम्य काल भी दो प्रकार का है। एक मूर्त या स्थूल, दूसरा सूक्ष्म, जिसका परिमाण नहीं हो सकता। प्राण से लेकर कल्पादि पर्यन्त काल को मूर्तकाल, एवं त्रुटि आदि (अति सूक्ष्म काल, जो व्यवहार में नहीं होता) को अमूर्त काल कहते हैं। सेकेंड के लगभग 1/3 भाग को त्रुटि कहते हैं। (सूर्य सिद्धांत, प्रथम अध्याय, श्लोक–10,11) अर्थात् ईश्वरीय काल (समय) अनन्त है। उसका आदि–अन्त नहीं है। दूसरा मानुषीकृत है, जिसको हम घंटा, मिनट, सेकेंड, दिन, रात, महीना, वर्षों में विभाजित करके गणना करते हैं। मगर हम मानुषी काल से आयु निश्चित नहीं कर सकते, क्योंकि भारतवर्ष में 24 घंटे का एक दिन–रात, 30 दिन का एक माह, और 12 महीनों का एक वर्ष होता है। मगर इसी पृथ्वी पर उत्तरी ध्रुव पर 6 माह का एक दिन और 6 माह की एक रात होती है। अर्थात् दिल्ली का एक वर्ष, ध्रुवों पर एक दिन ओर एक रात के बराबर होता है। चन्द्रमा, मंगल, शनि, बुध, शुक्र आदि ग्रहों पर दिन–रात, माह, वर्ष में बहुत अन्तर है, क्योंकि सभी ग्रहों की चाल अलग–अलग है। तो हम आयु को किस ग्रह के पैमाने से नापेंगे? परमपिता परमात्मा का नियम तो पूरे ब्रह्माण्ड में एक ही है। उसी कसौटी पर सभी प्रमाणों को कसना चाहिए, नहीं तो अन्य ग्रहों पर रहने वाले जीवों की आयु पृथ्वी पर रहने वाले जीवों से भिन्न होगी, जो ईश्वरीय व्यवस्था के प्रतिकूल है।

क्या आयु निश्चित है :

निश्चित आयु मानने वाले पिछले जन्म (जन्मों के नहीं) के कर्मों के आधार पर जन्म की आयु निश्चित मानते हैं, जो घटाई–बढ़ाई नहीं जा सकती। कुछ उदाहरण देते हैं– माननीय ओमप्रकाश शास्त्री जी कहते हैं कि यदि दिल्ली से कानपुर की ट्रेन–टिकट ली है, तो कानपुर ही उतरना पड़ेगा। इस पर हमारा कहना है कि कानपुर पहुंचना हमारा लक्ष्य है। यदि ट्रेन खुर्जा पर खराब हो गयी, तो दूसरी ट्रेन से; दूसरी भी खराब हो गयी, तो तीसरी से। यदि वह भी खराब हो गयी, तो बस से, कार से, अन्य किसी साधन से कानपुर पहुंचेंगे। कानपुर पहुंचना साध्य है, वाहन साधन है। इसमें समय की पाबन्दी नहीं है। पहली ट्रेन से हम शीघ्र पहुंच जाते, मगर स्टेशन पर लगी समय–सारणी के अनुसार कितनी ट्रेनें ठीक समय पर पहुंचती हैं? उसी प्रकार जो भोग हमें जिस योनि (जाति) में भोगने है, उन्हें भोगने के लिए तब तक जन्म लेते रहेंगे, जब तक भोग समाप्त न हो जाएं। यहां भोग साध्य है, योनि (जाति) साधन है। अपवाद छोड़कर सभी भोग एक जन्म में भोगे भी नहीं जा सकते।

श्री फूलचन्द्र शर्मा निडर जी भी पिछले जन्म के कर्मों के आधार पर वर्तमान जन्म की जाति की आयु निश्चित मानते हैं। यथा–

कईं वेदसुते सचा पिवन्तम
कद्वयो दधे।
अपं यः पुरो विभिनत्त्योजसा
मन्दानं शिप्रद्यन्धसः।।

(सामवेद तृतीय खंड, 18वां अध्याय, मंत्र सं0 1696)

अर्थ– यह जीव इस संसार में शरीर और इन्द्रियों के साथ कितनी आयु तक उपभोग करता है, इसको द्यौ और पृथ्वी का स्वामी आनन्दस्वरूप परमात्मा जानता है। और वही अपनी सामर्थ्य से समय पर उसकी मृत्यु करता है। इसमें आयु निश्चित है।

विस्तार में न जाकर हमारा निडर जी से एक प्रश्न है कि मान लो पिछले जन्म के कर्मों के आधार पर जीव को मानव योनि मिली। उस जीव के मनुष्य योनि में आने के कर्म केवल इतने हैं कि 2–4 माह गर्भ में रहकर मर गया, या पैदा होते ही, या 1–2 वर्ष जीवित रहा और मर गया; जैसा कि प्रत्यक्ष देखने में आता है। इस पर हमारा प्रश्न है कि गर्भ में या 1–2 वर्ष में जीवात्मा ऐसा कोई कर्म नहीं कर सकता, जिससे उसे अगले जन्म में मनुष्य योनि मिले। पिछले जन्म के कर्मों के आधार पर 2–4 माह गर्भ में या एक–दो वर्ष जिन्दा रहा। पिछले जन्म का भोग समाप्त हो गया। नया कर्म मनुष्य योनि में आने का वर्तमान जन्म में कोई किया नहीं। तो निडर जी बतायें कि उस जीव को भविष्य में मनुष्य योनि मिलेगी या नहीं। यदि हां, तो कारण बताएं। यदि नहीं, तो उस जीव की भोग योनियों के भोग भोगने के बाद क्या गति होगी?क्या जीव हमेशा के लिए मुक्त हो जाएगा, जो असम्भव है।

आयु निश्चित मानने वालों से एक प्रश्न और है, जो उनके सिद्धांत को भस्मीभूत कर देगा–

जीवनमुक्त–

जब योगी अत्यंत पुरुषार्थ तथा तपस्या के कामों की वासनाओं को दग्ध कर देता है, तो उसके सभी प्रकार के क्लेश नष्ट हो जाते हैं। योगी परमपिता परमात्मा की गोद में स्थिर होकर जीवनमुक्त हो जाता है। यथा–

1– न वा उ एतन्म्रियसे....................
ऋग्वेद– 1/162/21
2– नृचक्षसो अनिमिषन्तो..................
.. ऋग्वेद–10/63/4
3– ये देवानां यज्ञया..........................
.....ऋग्वेद– 7/35/15
4– यदा पंचा वतिष्ठते........................
कठोपनिषद– 6/10
5– अजीर्तामम‍ृतानां भुपेत्य ....
कठोपनिषद 1/28
6– विधियते परमे जन्मन्नग्ने.............
यजु0 17/75

आदि अनेकों उदाहरण हैं।

आयु निश्चित मानने वाले बतायें कि जब योगी ने अपने भोगों को दग्ध बीज कर दिया (भोगोन्मुख होने से रोक दिया), तो वह योगी किस कारण से संसार का उपभोग कर रहा है? उसे तो तुरन्त ही मर जाना चाहिए। आयु निश्चित मानने वाले बतायें कि आयु कितनी है, जिसको घटाया–बढ़ाया नहीं जा सकता?

क्या आयु घटायी–बढ़ायी जा सकती है :

इस सिद्धांत को मानने वालों से भी वही प्रश्न है कि आयु कितनी थी, जिसको अच्छे कर्मों से बढ़ा लिया और बुरे कर्मों से घटा लिया। वेद, शास्त्र, उपनिषद, मनुस्मृति, सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों में आयु को बढ़ाने–घटाने के अनेकों प्रमाण हैं, यथा–

शक्तिकुण्ड, फ्लैट नं0–2,
तालसपुर कलां मोड़, रामघाट
रोड, निकट– पीएसी
जनपद– अलीगढ़ (उ0प्र0)
फोन : 9719957755

शेष अगले अंक में.....

देश–विदेश में प्रसारित होने वाले

आर्यावर्त केसरी

में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

आर्यावर्त केसरी वर्तमान में देशभर के कोने–कोने के साथ ही विश्व के अनेक देशों में प्रसारित हो रहा है। विज्ञापनदाताओं से अनुरोध है कि वे अपने व्यक्तिगत विज्ञापन, शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों के विज्ञापन आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित कराकर लाभ उठायें।

विज्ञापन दर इस प्रकार है–

पूरा पृष्ठ रंगीन, एक अंक का शुल्क- 12000/- रुपये
अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/2 पृष्ठ का शुल्क- 6500/-
अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/4 पृष्ठ का शुल्क- 3500/-

स्थाई अथवा एक बार से अधिक प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों पर विशेष छूट देय है। -प्रबन्धक (विज्ञापन), मोबा. : 8630822099

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास, हरिद्वार

आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार/ प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित हैं

न्यास प्रतिवर्ष महात्मा आर्यभिक्षु (स्वामी आत्मबोध सरस्वती) के दीक्षा दिवस (जन्म दिवस) पर आर्य विद्वानों को सम्मानित करता है। इस वर्ष भी 31 जनवरी 2019 को सम्मानित किये जाने वाले वैदिक विद्वानों एवं कार्यकर्ताओं के चयन हेतु हिन्दी में निम्न प्रकार प्रस्ताव आमंत्रित हैं-

1. स्वामी धर्मानन्द विद्यामार्तण्ड आर्यभिक्षु पुरस्कार (आर्य विद्वान के लिए)
2. ब्र. अखिलानन्द आर्यभिक्षु पुरस्कार (नैष्ठिक ब्रह्मचारी के लिए)
3. स्वामी आत्मबोध सरस्वती कर्मवीर पुरस्कार (श्रेष्ठ आर्य कार्यकर्ता के लिए)

प्रथम व द्वितीय पुरस्कार सामान्यत: उन विद्वानों, ब्रह्मचारियों को प्रदान किये जाते हैं, जिनकी कोई निश्चित आय नहीं होती। तृतीय पुरस्कार के लिए ऐसी कोई शर्त नहीं है। प्रत्येक पुरस्कार राशि रुपये 11,000/- (ग्यारह हजार मात्र) हैं। 31 दिसम्बर 2018 तक प्रस्ताव (आवेदन) प्रधान अथवा मंत्री, न्यास के नाम से, सम्पूर्ण विवरण सहित भेजने का कष्ट करें।

गिरधारी लाल चांदवानी
अध्यक्ष

प्रोफेसर महावीर अग्रवाल
मंत्री (9719004452)

उत्तर भारत का लोकप्रिय पाक्षिक समाचार-पत्र

आर्यावर्त केसरी

पाठक संख्या — 50000

विज्ञापन एवं आलेख प्रकाशित करवाने के लिए सम्पर्क करें-

सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)-244221
फोन : 05922-262033, 09412139333
ई-मेल : aryawartkesari@gmail.com

आध्यात्मिक चिन्तन एवं वेदानुशीलन पर आधारित स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'वेदभिक्षु' द्वारा लिखित पुस्तक

आज ही मंगाएं यह संग्रहणीय पुस्तक

आयुष्मान् भव

(दीर्घ अर्थात् लम्बी आयु प्राप्त करो)
१२० पृष्ठ, रंगीन आवरण
: पुस्तक प्राप्ति स्थल :
स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'वेदभिक्षु'
आर्यसमाज मन्दिर, बिहारीपुर
बरेली (उ0प्र0)— 243003
चल0 : 09412372179, 9759527485
मूल्य : 25 रुपये

देश-विदेश में प्रसारित होने वाले

आर्यावर्त केसरी

में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

आर्यावर्त केसरी वर्तमान में देशभर के कोने-कोने के साथ ही विश्व के अनेक देशों में प्रसारित हो रहा है। विज्ञापनदाताओं से अनुरोध है कि वे अपने व्यक्तिगत विज्ञापन, शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों के विज्ञापन आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित कराकर लाभ उठायें।

विज्ञापन दर इस प्रकार है-

पूरा पृष्ठ रंगीन, एक अंक का शुल्क- 12000/- रुपये
अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/2 पृष्ठ का शुल्क- 6500/-
अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/4 पृष्ठ का शुल्क- 3500/-
स्थाई अथवा एक बार से अधिक प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों पर विशेष छूट देय है। **-प्रबन्धक (विज्ञापन), मोबा. : 8630822099**

अवश्य पढ़ें- आज ही मंगाएं

आर्य समाज की विचारधारा, वैदिक चिन्तन, तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों को जानने के लिए पढ़िए

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित
तथा आचार्य क्षितीश वेदालंकार द्वारा लिखित लघु पुस्तिका

आर्य समाज की विचारधारा

प्रत्येक परिवार, आर्य समाज तथा विद्यालयों में अवश्य होनी चाहिए यह लघु पुस्तिका। उत्सवों, साप्ताहिक सत्संगों, धार्मिक, सामाजिक अनुष्ठानों तथा शोभायात्रा आदि में सैकड़ों की संख्या में बांटें यह पुस्तिका, और जन-जन तक पहुंचाएं आर्य समाज व ऋषि दयानन्द सरस्वती की वैदिक विचारधारा।

न्यूनतम ५०० पुस्तकें लेने पर वितरक में नाम व पता प्रकाशन की सुविधा, तथा मूल्य में भी विशेष छूट।

हमारा पता है- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.), मो० : 09412139333

योग भगाए रोग — कोणासन ऐसे करें

विधि :

सीधे खड़े रहते हुए पैरों में कूल्हे के चौड़ाई जितनी दूरी बना ले और हाथों को शरीर के बाजू में रखें। साँस ले और अपने बाएं हाथ को इस तरह ऊपर उठाये की आपकी उंगलियाँ छत की दिशा में रहें। साँस छोड़ते हुए रीढ़ की हड्डी को झुकाते हुए अपनी दाहिनी ओर झुके, उसके बाद अपने श्रोणि को बाईं ओर ले जाएँ और थोड़ा और झुके। अपने बायें हाथ को ऊपर की ओर तना हुआ रखे। बायीं हथेली से उपर देखने के लिए अपने सिर को घुमाए। कोहनियों को सीधा रखें। साँस लेते हुए अपने शरीर को वापस सीधा करें। साँस छोड़ते हुए अपने बायें हाथ को नीचे लाए।

लाभ :

रीढ़ की हड्डी और बाजुओं व टाँगों को खींच कर सीधा रखने में सहायता।

हाथ, पैर और धड़ के सभी भागों में सुदृढ़ता।

पीठ के दर्द से निजात।

रीढ़ की हड्डी को लचीला बनाता है।

कब्ज़ में राहत मिलती है।

कटिस्नायु शूल (साईटीका) के रोगियों को लाभ मिलता है।

आओ योग करें

इस स्तंभ के अन्तर्गत योग-ऋषि स्वामी रामदेव जी द्वारा प्रस्तुत योग संबन्धी सामग्री नियमित रूप से प्रकाशित की जा रही है। आशा है कि इस स्तम्भ से पाठकगण लाभान्वित होंगे और योग को अपनी जीवनशैली बनाकर 'योग युक्त विश्व- रोग मुक्त विश्व' की ओर उद्यत होंगे। -सम्पादक

हमारे जीवन में योगासन तथा प्राणायाम का विशेष महत्व है। हमें नियमित रूप से इनका अभ्यास करना चाहिए। इससे शरीर निरोगी रहता है तथा व्यक्ति दीर्घायुष्य को प्राप्त करता है। प्रात:काल की बेला में हम नियमित रूप से योगाभ्यास तथा प्राणायाम करने का संकल्प लें।

- संपादक

सत्यार्थप्रकाश पढ़कर पाओ लाख रुपये

आर्यावर्त केसरी सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार योजना

सत्यार्थप्रकाश के मर्म को समझने-समझाने का दायित्व विद्वानों का है। हमारा प्रयास सत्यार्थप्रकाश के विद्वान तैयार करना है, जो महर्षि दयानन्द के सधर्म रथ को आगे बढ़ा सकें। इसी उद्देश्य से आर्यावर्त केसरी पाक्षिक के सानिध्य में श्री सुमन कुमार वैदिक के संयोजन में सत्यार्थप्रकाश परीक्षा आयोजित की जा रही है।

परीक्षा में बैठने के लिए आर्यावर्त केसरी, निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा के पते पर अपना नाम, पता, फोटो, परिचय की छायाप्रति के साथ 150/- रुपये की धनराशि देनी होगी, जिसमें प्रतिभागी को एक सत्यार्थप्रकाश दिया जाएगा या छ: माह की आर्यावर्त केसरी पाक्षिक की सदस्यता दी जाएगी। यदि आप अपना रजिस्ट्रेशन डाक द्वारा कराएंगे, तो उस स्थिति में आर्यावर्त केसरी के भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या-30404724002 (IFSC कोड SBIN 0000610) में 200/- रुपये जमा कराने होंगे तथा रसीद की छायाप्रति भेजनी होगी। पंजीकरण दिनांक- 01 अक्टूबर 2018 से प्रारम्भ हो चुके हैं। पंजीकरण आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के कार्यालय में अथवा ग्रेटर नोएडा स्थित श्री सुमन कुमार वैदिक के निवास पर कराये जा सकते हैं।

प्रथम पुरस्कार- एक लाख रुपये तथा स्मृति चिह्न
द्वितीय पुरस्कार- पचास हजार रुपये तथा स्मृति चिह्न
तृतीय पुरस्कार- पच्चीस हजार रुपये तथा स्मृति चिह्न
अनेक नामित पुरस्कार- इसकी संख्या निश्चित नहीं है क्योंकि ये श्रद्धालुओं के परिजनों के नाम से दिये जाएंगे।
पच्चीस पुरस्कार- एक-एक हजार रुपये।

-: कैसे बनेंगे विजेता :-

(1) परीक्षा में वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे, जिनका उत्तर उत्तरपुस्तिका में लिखना होगा।
(2) किसी भी आयुवर्ग का व्यक्ति परीक्षा दे सकता है।
(3) आर्यावर्त केसरी के 25 सदस्य एक स्थान पर बनाने वाले का पंजीकरण नि:शुल्क होगा एवं आर्यावर्त केसरी की ओर से उसको फोटोयुक्त प्रेस परिचय पत्र दिया जाएगा।
(4) पत्र-व्यवहार में सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा लिफाफे पर अवश्य लिखें। परीक्षा का आयोजन दिनांक- 07 जुलाई 2019 को इन प्रस्तावित केन्द्रों- दिल्ली, अमरोहा, ग्रेटर नोएडा, लखनऊ, नजीबाबाद, बरनावा, सासनी, मेरठ, बनारस, बरेली, गुरुग्राम, महेन्द्रगढ़, झज्जर, हिसार, रोहतक, मुम्बई, बेंगलूरु, कलकत्ता, चेन्नई, होशंगाबाद, हैदराबाद, बोकारो, भोपाल, चण्डीगढ़, रोजड़, कोटा, हरिद्वार, उदयपुर, अहमदाबाद आदि में सम्पन्न होगी। परीक्षा केन्द्रों की संख्या बढ़ाने अथवा घटाने तथा परीक्षा तिथि में परिवर्तन करने का अधिकार संयोजक मण्डल को होगा।

विशेष :

1- जो भी परीक्षार्थी विजेता घोषित होगा, उसको पुरस्कार प्राप्त करने से पूर्व मंच पर अपनी योग्यता भी सिद्ध करनी होगी। पुरस्कार-मंच पर उससे जनसामान्य के द्वारा सत्यार्थप्रकाश से संबन्धित प्रश्न पूछे जाएंगे।
2- अपने प्रियजनों की स्मृति में उनके नाम से।
3- सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा की निधि हेतु मुक्तहस्त से दान दें, रजिस्ट्रेशन कराने में अक्षम प्रतिभागियों को शुल्क में मद्द दें।
4- आयोजन में हमसे जुड़कर सहयोग करें, तथा अपने शहर में परीक्षा का केन्द्र बनवाएं। धन्यवाद,

सुमन कुमार वैदिक- मुख्य संयोजक
निवास- जे.380, बीटा-।।,
ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) मो. 8368508395

डॉ० अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
मो. 9412139333

डॉ० अनिल रायपुरिया- संयोजक
नि. कोट बाजार, अमरोहा
मोबा. : 9837442777

श्री, समृद्धि, यश, वैभव, सुस्वास्थ्य व दीर्घायुष्य की दें

मंगलकामनाएं

जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, अथवा किसी विशेष उपलब्धि जैसे पावन अवसरों पर अपने परिजनों, मित्रों व शुभचिन्तकों को बधाई व शुभकामनाएं देना न भूलें।

आओ आर्यावर्त केसरी के माध्यम से ऐसे बधाई संदेश व शुभकामनाएं प्रकाशित कराएं...

और प्रदान करें

आर्यावर्त केसरी के प्रचार-प्रसार यज्ञ में 501/- की सहयोग रूपी पावन आहुति।

-सम्पादक (मोबा. : 9412139333)

आर्यावर्त केसरी के सदस्यों से विनम्र अनुरोध

आर्यावर्त केसरी के सभी सम्मानित सदस्यों से अनुरोध है कि उनकी वार्षिक सदस्यता अवधि नाम व पते की स्लिप पर अंकित रहती है। अतः स्लिप पर अंकित अवधि के अनुसार यथासमय अपना वार्षिक सदस्यता सहयोग भेजते रहा करें। जिन मान्य सदस्यों ने अभी तक अपनी वार्षिक सदस्यता–राशि जमा नहीं की है, वे कृपया मनीआर्डर द्वारा आर्यावर्त केसरी के पते पर भेजकर रसीद प्राप्त कर लें, ताकि उन्हें आर्यावर्त केसरी निरंतर मिलता रहे।

प्रबन्धक (प्रसार)– आर्यावर्त केसरी

आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा द्वारा स्थापित

सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि के सहयोगी महानुभाव

डॉ. कुलदीप कुमार महेन्द्रा – स्व. श्रीमती कमलेश कुमारी
कछुआ (जम्मू कश्मीर) राशि- २१००/-

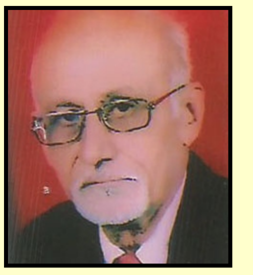

डॉ. एम.एस. त्यागी 'अर्श'
दूल्हेपुर अहीर (अमरोहा)
राशि- ११००/-

१. श्री सोमपाल सिंह आर्य, रामपुर (उ.प्र.) - राशि- ११००/-
२. श्री राधा बल्लभ राठौर, कोटा (राज.) - राशि- १०००/-
३. श्री बलराम सिंह, शिवाला खुर्द - राशि- ११००/-
४. ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट, नई दिल्ली - राशि- ११०००/-

विशेष : न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' तथा आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित किये जाएंगे

आर्यावर्त प्रकाशन द्वारा स्थापित सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि में सहयोग देकर

घर-घर पहुंचाएं सत्यार्थ प्रकाश

धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं है, यदि आप चाहें तो यह राशि इस ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी हमें भेज सकते हैं। आपकी घोषित धनराशि के अनुरूप उतनी ही प्रतियों में आपके चित्र व नाम प्रकाशित किये जाएंगे। धन्यवाद

टंकारा चलो

आर्यावर्त केसरी प्रबंध समिति के नेतृत्व में गतवर्षों की भांति अहमदाबाद, द्वारिका, पोरबंदर, सोमनाथपुरी व टंकारा आदि का परिभ्रमण कार्यक्रम २६ फरवरी से ०६ मार्च २०१९ तक

विस्तृत रूपरेखा पृष्ठ ४ पर देखें।

सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर पाओ लाख रुपये

आर्यावर्त केसरी- सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार योजना

विस्तृत जानकारी पृष्ठ- १५

सुमन कुमार वैदिक
8368508395, 9456274350
डॉ. अनिल रायपुरिया
9837442777

आर्यावर्त केसरी के आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित 'आर्यावर्त केसरी' के बचत खाता संख्या- 30404724002 (IFSC कोड : SBIN0000610) में जमा करा सकते हैं, अथवा चैक या धनादेश द्वारा भेज सकते हैं। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.), दूर. -05922-262033, चल.- 09412139333

आइये! आज ही आर्यावर्त केसरी के मिशन से जुड़िए...

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-

आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033,
9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawartkesari@gmail.com

आर्यावर्त केसरी
संरक्षक
स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', (मोबा : 9456274350)
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र, डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार, डॉ. ब्रजेश चौहान, अमित कुमार
मुद्रण- इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य